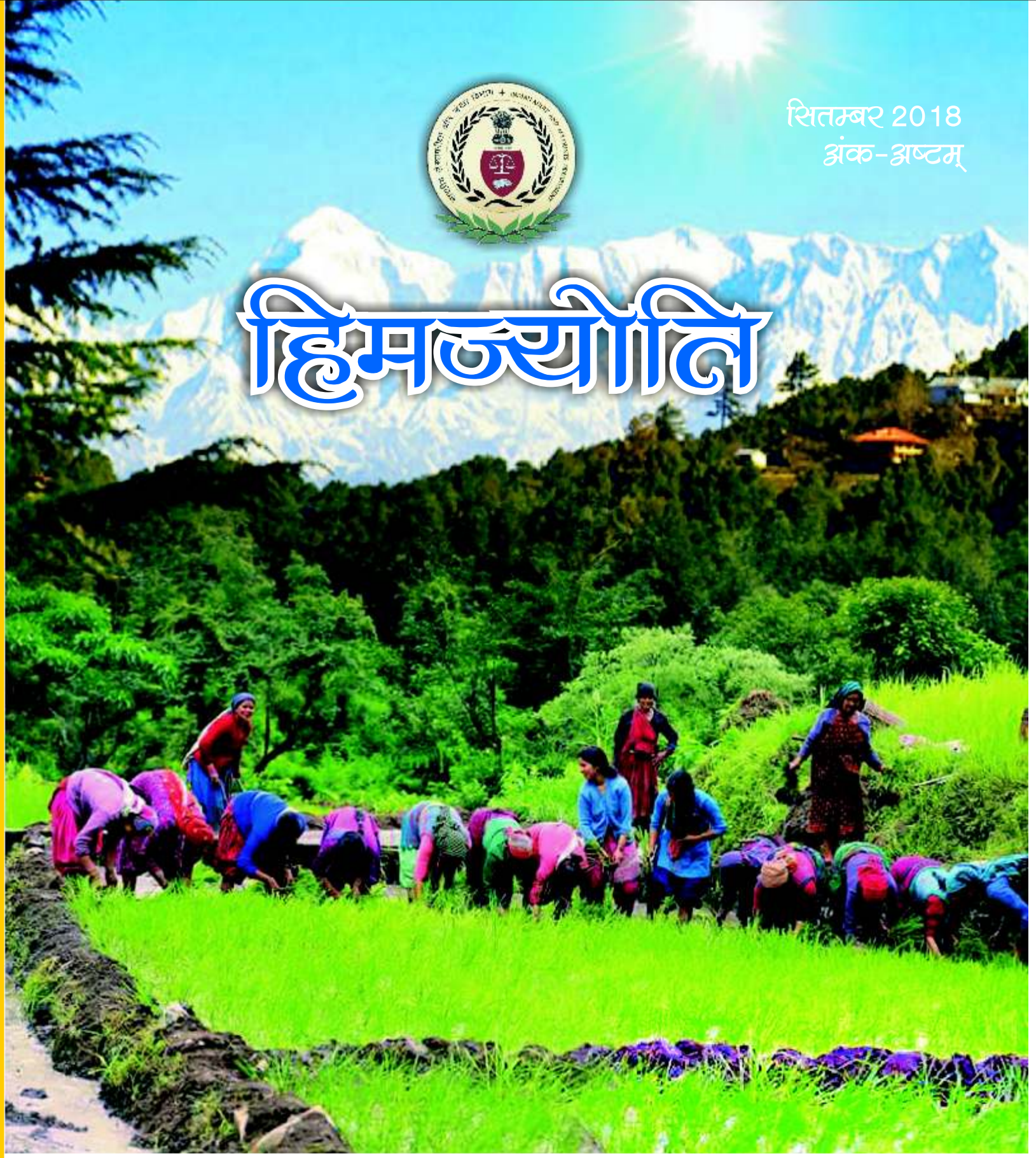


सितम्बर 2018
अंक-अष्टम्

# हिमज्योति

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून

सितम्बर 2018
अंक - अष्टम्

# हिमज्योति



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून

सत्यमेव जयते



**रोली एस० मालगे**
**महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)**
**उत्तराखण्ड**

# संदेश

हमारे कार्यालय की राजभाषा को समर्पित पत्रिका **"हिमज्योति"** के आठवें अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। राजभाषा हिंदी के निरन्तर विकास में पत्र–पत्रिकायें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके साथ ही विभागीय गतिविधियों की महत्वपूर्ण सूचनाओं का प्रसरण भी करती हैं। मैं पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल एवं समस्त रचनाकारों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पत्रिका के निरन्तर प्रचार–प्रसार में अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया है। कार्यालयी कार्यों की अधिकता के बावजूद अपनी लेखनी से उन्होंने राजभाषा को सशक्त करने में महत्वपूर्ण एवं सराहनीय भूमिका निभायी है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि समस्त रचनाकार एवं पाठकवृन्द अपनी सहभागिता नियमित रूप से बनाये रखेंगे तथा राजभाषा के उत्थान के प्रति सदा समर्पित भाव से कार्य निष्पादित करेंगे।

पत्रिका का मूल उद्देश्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक क्षमता का विकास एवं अभिव्यक्ति कौशल में उत्तरोत्तर वृद्धि करना है। मैं ऐसी कामना करती हूँ कि सभी अधिकारी/कर्मचारी कार्यालय के दैनिक कार्यों को राजभाषा के प्रति निष्ठावान होकर निष्पादित करेंगे।

रोली

**संरक्षक एवं निदेशक**

सत्यमेव जयते



एन० के० डबराल
उप महालेखाकार
(प्रशासन एवं लेखा)

# प्रधान सम्पादक की कलम से

यह हमारे लिए हर्ष का विषय है कि 'हिमज्योति' पत्रिका का आठवां अंक आपके करकमलों में समर्पित कर रहे हैं। हमारे कार्यालय के रचनाकार अपने साहित्यिक चिंतन एवं अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के माध्यम से पत्रिका को निरंतर नया आयाम देने में भी सक्षम हुए हैं। पत्रिका परिवार के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं।

कार्यालय के अपने संवैधानिक दायित्वों के साथ–साथ हमारा यह नैतिक दायित्व बनता है कि राजभाषा हिन्दी को अपने सतत् प्रयासों से राजभाषा की वास्तविक पदवी प्राप्त कराने में पूर्ण रूप से सहयोग करें। निरंतर प्रयासों से संभावनाएं फलीभूत होती हैं। दृढ़ निश्चय किसी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को विपरीत परिस्थितियों में विकास के पथ पर आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करता है तथा अथक प्रयास एवं आत्मविश्वास 'निश्चय' को मूर्त रूप प्रदान करता है। राजभाषा के प्रति यही निष्ठा एवं समर्पण ही इस पत्रिका का आधार है।

मैं अपने सुधी पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ कि आपके शुभकामना संदेशों ने निरंतर हमारे आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया है। आपके द्वारा प्रेषित बहुमूल्य सुझावों का हम हृदय से स्वागत करते हैं। 'हिमज्योति' का यह अंक आपके द्वारा सुझाए मार्ग पर एक और कदम है।

प्रधान सम्पादक

# ''पत्रिका परिवार''


**संरक्षक एवं निदेशक**

सुश्री रोली एस. मालगे
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

**प्रधान संपादक**

श्री एन.के. डबराल
उप महालेखाकार (प्रशासन एवं लेखा)

**संपादक**

श्री रमेश कुमार शर्मा
उप महालेखाकार (निधि)

**सलाहकार संपादक**

श्री विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी

**सहायक संपादक**

श्री भास्करानन्द त्रिपाठी
सहायक लेखाधिकारी

श्री सुशील कुमार देवली
सहायक लेखाधिकारी

श्री महावीर सिंह रावत
सहायक लेखाधिकारी

डॉ0 दिनेश शर्मा
वरिष्ठ लेखाकार

**साज सज्जा एवं टंकण**

सुश्री मीनाक्षी चौरसिया
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री दीपा पंवार
कनिष्ठ अनुवादक

श्री अमित कुमार
डी0 ई0 ओ0


**आवरण पृष्ठ**

बागेश्वर में कौसानी रोड पर धान की रोपाई करतीं स्थानीय महिलाएं।
(छायाकार : रामबीर सिंह, वरिष्ठ लेखाधिकारी)

**पार्श्व पृष्ठ**

फूलों की घाटी (चमोली, उत्तराखण्ड)

मूल्य..... राजभाषा के प्रति निष्ठा


रचनाकारों के विचारों से संपादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।



मुद्रक:
प्रिन्ट विज़न, 41-सी, राजपुर रोड, देहरादून (उत्तराखण्ड)
दूरभाष : 0135–2741702, 6532172 | www.printvisionindia.com

सत्यमेव जयते



**रमेश कुमार शर्मा**
**उप महालेखाकार**
**(निधि)**

# सम्पादकीय

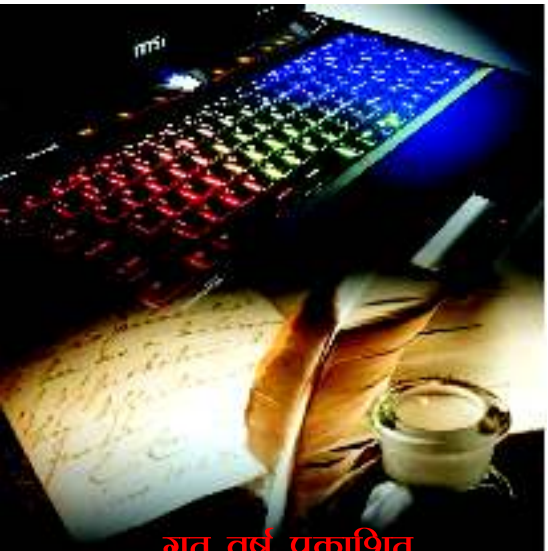
राजभाषा हिन्दी को पूर्णतः समर्पित इस कार्यालय की गृहपत्रिका हिमज्योति के आठवें अंक के प्रकाशन पर मुझे बेहद हर्ष का अनुभव हो रहा हैं। यह पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों के लिए उनकी साहित्यिक अभिरूचियों की अभिव्यक्ति का खूबसूरत माध्यम है। मैं उम्मीद करता हूँ कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार–प्रसार में हमारे द्वारा किए गए प्रयासों में सहायक सिद्ध होगी।

मैं सभी रचनाकारों, सम्पादक मण्डल तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं देता हूँ। उनके अमूल्य योगदान के बिना इस पत्रिका का प्रकाशन संभव नहीं था। रचनाओं में विविधता लिए हुए यह अंक पत्रिका को समृद्ध बनाता है।

मैं अपने समस्त पाठकों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका भविष्य में भी हमारे पाठकों की साहित्यिक जिज्ञासाओं की पूर्ति करती रहेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

**सम्पादक**



गत वर्ष प्रकाशित 'हिमज्योति' के सप्तम् संस्करण के लिए हमें उत्साहवर्द्धक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं। प्राप्त प्रतिक्रियाओं में से कुछ का उल्लेख यहाँ किया गया है, जोकि हमें 'हिमज्योति' के इस संस्करण के लिए और अधिक प्रयास करने और गुणवत्ता में सुधार हेतु प्रेरणा एवं विश्वास देती है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह अंक पूर्व की अपेक्षा और अधिक रूचिकर सिद्ध होगा तथा आप इस अंक के संबंध में अपने अमूल्य सुझाव / प्रतिक्रियाओं से हमें पूर्ववत् अवगत कराएंगे। आपकी प्रतिक्रियाएं हमारे लिए पुरस्कार के समान हैं।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका हिमज्योति के सप्तम् अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ तथा साजसज्जा काफी आकर्षक है। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ काफी रोचक, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय है। विशेषकर वी.के. शर्मा द्वारा रचित लेख 'बाल श्रम के उन्मूलन की आवश्यकता' तथा 'योग का महत्व काफी ज्ञानवर्धक है, पूजा त्रिपाठी की कविता 'बढ़ते कदम' तथा दीपा पंवार की कविता 'रोशनी' सराहनीय है। पत्रिका में प्रकाशित सभी छविचित्र काफी मनमोहक है।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु संपादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु अंक में रोचक तथा ज्ञानवर्धक कहानियों को भी पर्याप्त स्थान दिया जाएगा।

**व0ले0प0 अधिकारी (प्रशासन/हिंदी)**
**कार्यालय– प्रधान महालेखाकार**
**(सामान्य एवं समाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा),**
**पश्चिम बंगाल**

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका ''हिमज्योति'' के सप्तम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ रूचिकर एवं सराहनीय ही नहीं बल्कि संग्रहणीय भी है।

आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

**वरि0 लेखाधिकारी/हिंदी कक्ष**
**महालेखाकार (लेखा एवं हक0) का कार्यालय,**
**कर्नाटक**

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''हिमज्योति'' की प्रति प्राप्त हुई। कार्यालय की पत्रिका के मुखपृष्ठ पर कार्यालय का नवनिर्मित भवन अति सुंदर एवं मनोहारी है। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं जैसे कोशिश, सुनहरे बचपन की यादें, योग का महत्व, उलझे धागे, मां वैष्णो देवी की यात्रा वृत्तान्त, शहादत और खिचड़ी इत्यादि सभी रचनाएं अत्यंत रोचक व उत्कृष्ट है। नवनिर्मित कार्यालय भवन की झलकियां बहुत सुंदर है। हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

**लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशा0**
**महालेखाकार का कार्यालय**
**(लेखापरीक्षा)-III, महाराष्ट्र**

महोदय,

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका ''हिमज्योति'' के सप्तम अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका संघ की राजभाषा को समर्पित संग्रहणीय अंक है जो पाठकों को लाभ पहुँचाएगा। अधिकांश प्रविष्टियों में भारतीय परम्परागत संस्कृति की आधुनिकता को मार्मिक एवं गूढ़ भावों के साथ उकेरा गया है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/**
**राजभाषा अनुभाग**
**कार्यालय महालेखाकार**
**(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र**
**लेखापरीक्षा) राजस्थान, जयपुर**

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका ''हिमज्योति'' का सप्तम् अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की बहुरंगी प्रस्तुति बहुत ही आकर्षक है तथा संपूर्ण सामग्री प्रशंसनीय है। रचनाओं में हिंदी का उच्च स्तर कार्मिकों के हिंदी प्रेम को दर्शाता है। विनोद कुमार शर्मा का 'बालश्रम के उन्मूलन की आवश्यकता' तथा बृजभूषण सेमवाल का 'तपोभूमि है बद्रीनाथ धाम' लेख बड़े ही ज्ञानवर्धक व प्रेरणादायक हैं। महावीर सिंह रावत की 'मैं क्या कहूँ', भास्करानंद त्रिपाठी की 'बदली सी बयार' दोनों कविताएं तथा दीपा पंवार की गज़ल 'रोशनी' सराहनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

**सहायक लेखाधिकारी/हिंदी कक्ष**
**कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) चण्डीगढ़**

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'हिमज्योति' का सातवाँ अंक प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। यह अंक अपनी साज–सज्जा और मुद्रण से बहुत ही आकर्षक बन पड़ा है। पत्रिका के इस अंक में कई स्तरीय रचनाएँ हैं। आलेख, कहानियाँ, संस्करण, कविताएँ बहुत ही ज्ञानवर्धक एवं भावपूर्ण हैं। इसमें तू है तो मैं हूँ, कोशिश, बालश्रम के उन्मूलन की आवश्यकता, योग का महत्व, रोशनी, शहादत, एक बार फिर, चींटियों को पहले ही चल जाता है भूकम्प का पता जैसी रचनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

सारांशतः राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में इस पत्रिका ने अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया है। पत्रिका भविष्य में भी अपनी भूमिका को और प्रभावी बनाये रखे, ऐसी कामना है।

**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**
**कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार**

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका ''हिमज्योति'' के सप्तम् अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का मुद्रण एवं छायाचित्रों का छायांकन अति आकर्षक है। प्रस्तुतिकरण बहुत सुंदर है। श्री विनोद कुमार शर्मा का लेख 'बाल श्रम के उन्मूलन की आवश्यकता' तथ्यपरक है। श्री बृजभूषण सेमवाल का लेख 'तपोभूमि है बद्रीनाथ धाम' रोचक है। श्री शिवम लिल्हौरी की 'एक बार फिर' एवं श्री महावीर सिंह रावत की 'मै क्या कहूं' सरस कविताएं है।

पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु हार्दिक बधाइयां।

**वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंदी**
**कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)–प्रथम,**
**उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद**

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र सं0 27/हि0अ0/गृह पत्रिका/हिमज्योति–सप्तम अंक/190 दिनांक 13.10.2017 द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका ''हिमज्योति'' के सप्तम अंक की प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनायें उत्कृष्ट पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। ''कोशिश'', ''बालश्रम के उन्मूलन की आवश्यकता'', ''खिचड़ी'', ''शहादत'', ''मां वैष्णो देवी की यात्रा वृत्तांत'' और ''एक बार फिर'' विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। रचनाकारों एवं पत्रिका के कुशल सम्पादन के लिए सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

**लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष**
**प्रधान महालेखाकार, (लेखापरीक्षा)**
**हिमाचल प्रदेश, शिमला**

महोदय,

आपकी पत्रिका 'हिमज्योति' के सप्तम अंक की प्राप्ति। धन्यवाद!

पत्रिका में 'कोशिश, 'बालश्रम के उन्मूलन की आवश्यकता' और 'तपोभूमि है बद्रीनाथ धाम' आदि लेख प्रेरणा स्त्रोत और ज्ञानवर्धक है। कविता 'कोलाहल' 'संगम' और 'बेबस दिल' आदि अच्छी लगी। सभी रचनाएँ सराहनीय और प्रेरणात्मक हैं।

पत्रिका की उज्ज्वल भविष्य की आशा करते है।

**हिंदी अधिकारी**
**प्रधान महालेखाकार (ले0 एवं ह0)**
**का कार्यालय, तेलंगाना, हैदराबाद।**

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका 'हिमज्योति' के सप्तम अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका में संग्रहित सभी रचनाएँ सरल एवं ज्ञानवर्धक है।

श्री विनोद कुमार शर्मा की ''योग का महत्व'' एवं श्री महावीर सिंह रावत की ''माँ वैष्णोदेवी की तीर्थ यात्रा वृतांत'' काफी सराहनीय है।

पत्रिका में संग्रहीत सभी रचनाएँ राजभाषा को बढ़ावा देने हेतु उपयोगी है। ''हिमज्योति'' निरंतर प्रकाशित होती रहे, ये हमारी शुभकामना है।

**व0 ले0 प0 अधिकारी (राजभाषा)**
**कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा**
**(केन्द्रीय प्राप्ति), इन्द्रप्रस्थ इस्टेट,**
**नई दिल्ली।**

महोदय,

आपके पत्र संख्या 27/हि0अ0/गृह पत्रिका/हिमज्योति–के सप्तम अंक/273 दिनांक 13.10.2017 द्वारा प्रेषित पत्रिका 'हिमज्योति' के सप्तम अंक की प्राप्ति हुई जिसके लिए आपको हार्दिक धन्यवाद करता हूँ।

जिस प्रकार से पत्रिका का नामांकन किया गया है वैसी ही उसकी विषयवस्तु भी रखी गयी है। पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर नवनिर्मित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग भवन की फोटो देखकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। पत्रिका में प्रकाशित लेख बहुत ही प्रेरणादायक है। पत्रिका पाठकों के लिये बहुत ही ज्ञानवर्धक एवं शिक्षाप्रद साबित होगी। आशा है कि भविष्य में भी आप इस तरह के सफल प्रकाशन हम पाठकों के लिए प्रकाशित करते रहेंगे।

**मुख्य अभियन्ता (उ0अं0–IV) के0लो0नि0वि0,**
**कार्यालय मुख्य अभियन्ता (उ0अ0–IV) केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, देहरादून।**

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'हिमज्योति' के सप्तम् अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चत्तर श्रेणी की है।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/**
**हिंदी प्रकोष्ठ प्रधान महालेखाकार**
**(लेखापरीक्षा),**
**झारखण्ड का कार्यालय, राँची**

महोदय,

पत्रिका में समाविष्ट समस्त रचनाएँ अति रोचक, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। सम्पादन और कलेवर की दृष्टि से पत्रिका सुरूचिपूर्ण एवं सुंदर बन गई है। पत्रिका की श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक–मंडल बधाई के पात्र है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास आगे भी जारी रखें।

**लेखा अधिकारी/प्रशा0**
**महालेखाकार (ले0 एवं ह0) का**
**कार्यालय, असम**



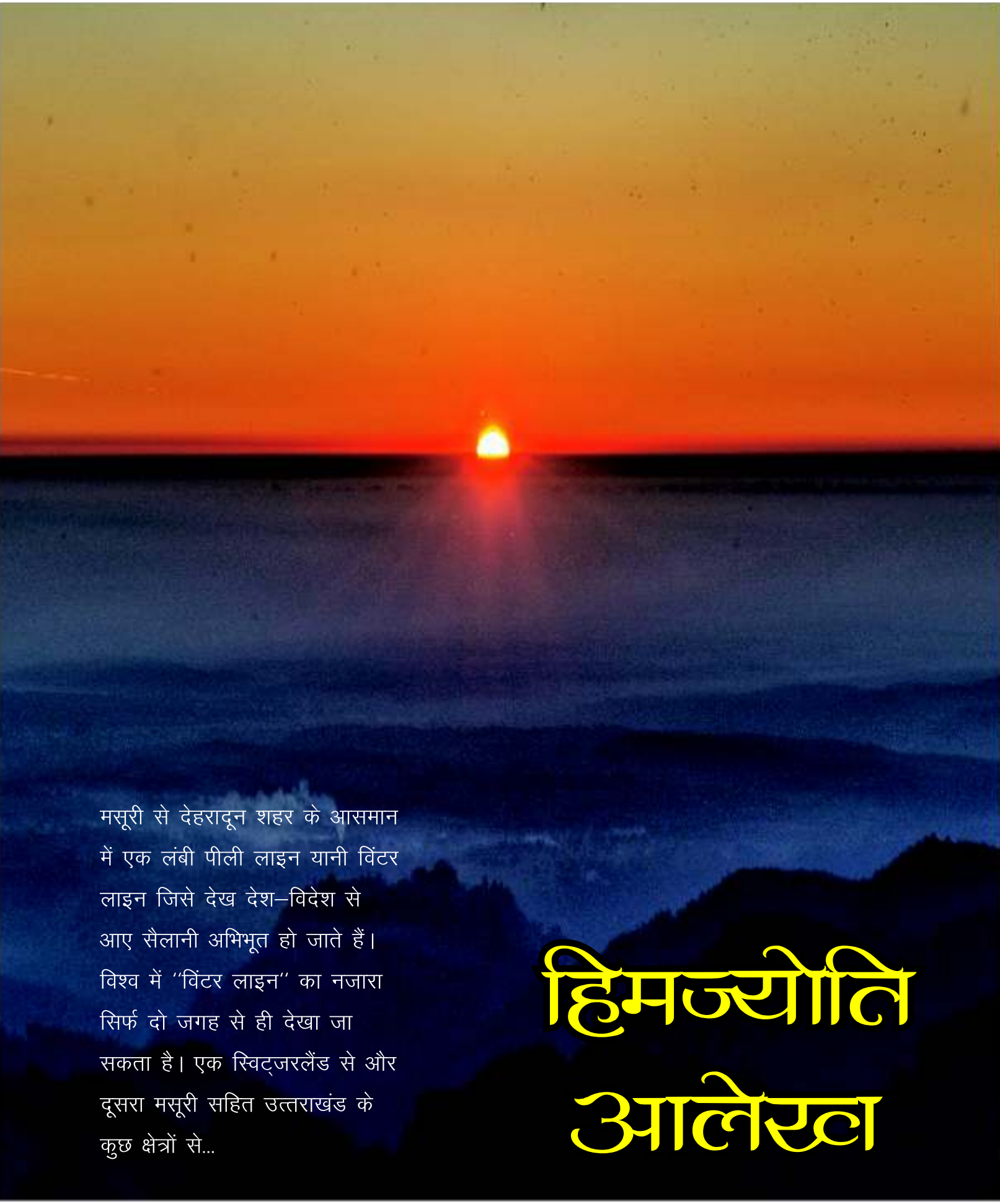
# अनुक्रमणिका


| विधा | रचना का नाम | रचनाकार (सर्व श्री / श्रीमती / सुश्री) | पृष्ठ सं0 |
|---|---|---|---|
| कहानी | टपका | ओमप्रकाश | 16 |
| आलेख | सेवा पुस्तिका: एक महत्वपूर्ण अभिलेख | विनोद कुमार शर्मा | 18 |
| कहानी | परोपकार | रामबीर सिंह | 19 |
| आलेख | ईश्वर–एक सोच | ओमप्रकाश | 21 |
| आलेख | सरकारी कामकाज में हिंदी: झिझक दूर करने की आवश्यकता | विनोद कुमार शर्मा | 23 |
| कविता | नियति | प्रशांत जोशी | 24 |
| गीत | सलोना उत्तराखण्ड | अजय कुमार पाल | 25 |
| कविता | कचरा | के.के. नन्दा | 26 |
| आलेख | प्रकृति और मानव | दिनेश शर्मा | 27 |
| कविता | अपने बड़े | प्रविन्द्र सिंह तोमर | 29 |
| आलेख | पाप से मुक्ति होती है गंगोत्री धाम में | बृजभूषण सेमवाल | 30 |
| कविता | पापा | प्रविन्द्र सिंह तोमर | 32 |
| कविता | नव सृजन | महावीर सिंह रावत | 33 |

| विधा | रचना का नाम | रचनाकार (सर्व श्री / श्रीमती / सुश्री) | पृष्ठ सं0 |
|---|---|---|---|
| कविता | लौट आओ | राम भरोसे कौशिक | 34 |
| कविता | किस ओर | विक्रान्त कुमार | 35 |
| कविता | नूरे चश्म को शिकार बनाया | महावीर सिंह रावत | 36 |
| संस्मरण | गुफ्तगू | शिवम लिल्हौरी | 37 |
| क्षणिका | नया साल | विरेन्द्र रमोला | 39 |
| कविता | शब्द बड़े अनमोल | विक्रान्त कुमार | 40 |
| क्षणिका | सर्दी और कवि | विरेन्द्र रमोला | 40 |
| यात्रा–वृतान्त | चम्बा के चीड़ – धनौल्टी के देवदार | शिवम सिंह | 41 |
| कविता | अल्फाज | शिवम लिल्हौरी | 45 |
| कविता | वो एक पल | कुमारी सोनिया तोमर | 46 |
| गज़ल | फितरत | शिवम लिल्हौरी | 47 |
| गज़ल | चार लाईनें | सुशील कुमार देवली | 48 |

**गतिविधियां**

| | |
|---|---|
| वर्ष 2017–18 के दौरान उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रमाण–पत्र तथा नकद पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारी एवं कर्मचारी | 50 |
| हिन्दी सप्ताह वर्ष 2017 की झलकियां | 51 |
| मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित खेल प्रतियोगिताएँ | 53 |
| गणतंत्र दिवस समारोह 2018 | 54 |
| स्वागत / विदाई | 55 |



मसूरी से देहरादून शहर के आसमान में एक लंबी पीली लाइन यानी विंटर लाइन जिसे देख देश–विदेश से आए सैलानी अभिभूत हो जाते हैं। विश्व में ''विंटर लाइन'' का नजारा सिर्फ दो जगह से ही देखा जा सकता है। एक स्विट्जरलैंड से और दूसरा मसूरी सहित उत्तराखंड के कुछ क्षेत्रों से...

# हिमज्योति आलेख

छायाकार: आशीष मलिक,
सहायक लेखाधिकारी

# टपका

कहानी



**ओमप्रकाश**
वरिष्ठ लेखाधिकारी

भारत गाँवों का देश है। लगभग 80 प्रतिशत आबादी गाँवों में रहती है। हालाँकि आज के समय में गांवों से पलायन होकर शहरी क्षेत्रों में आबादी तेजी से बढ़ रही है जिसका मुख्य कारण गरीबी, बेरोजगारी, बीमारी एवं भुखमरी है। लोग अच्छे जीवन की तलाश में शहरों की तरफ पलायन कर रहे हैं। गाँवों में रह रही आबादी कृषि पर निर्भर है जिनमें कुछ किसान हैं तथा कुछ उन पर निर्भर कृषि मजदूर। आज की कृषि बड़ी कठिन हो गयी है। किसान अपना ही पेट ठीक से नहीं भर पा रहा है तो वह उन पर निर्भर कृषि मजदूरों का पेट कैसे भरे। किसान आत्महत्या कर रहा है जिसका कारण आज कृषि कार्य बहुत महंगा हो गया है लागत मूल्य अधिक हो गया है, कर्ज पर खेती की जा रही है। दैवीय आपदा, सूखा, खेती के लिए बिजली की अनुपलब्धतता, जमीन के नीचे पानी का तल अधिक नीचे चले जाने से नलकूप आदि पर अधिक खर्च, उर्वरकों की कीमतें अधिक होने के कारण किसान कर्ज ले रहा है तथा कर्ज न चुका पाने के कारण कर्ज वसूल करने वालों के हाथों जिल्लत से बचने के लिए आत्महत्या कर रहा है।

> *"अतिवृष्टि से जूझते जनमानस के मन में व्याप्त भय को दर्शाती सरस कहानी 'टपका' जल संसाधनों के महत्त्व और उनके संरक्षण की आवश्यकता पर बल देती है"*

गांवों की निर्धनता से सम्बंधित एक गांव की कहानी है। गाँव में एक बूढ़ी दादी रहती थी, गरीब थी तथा अकेली थी। गाँव के किसान के घर मेहनत कर अपना गुजारा करती थी। एक कच्ची झोंपड़ी में रहती थी। कच्ची झोंपड़ी बरसात के मौसम में बड़ी परेशानी खड़ी करती थी। पानी टपकता था, और आराम करना सोना कठिन हो जाता था, घर का सारा सामान गीला हो जाता था। एक रात मौसम बड़ा खराब था, बरसात होने वाली थी। बूढ़ी दादी अपने आप में ही बड़बड़ा रही थी कि मैं बीमारी से लड़ सकती हूं, गरीबी से लड़ सकती हूँ, मैं शेर से भी नहीं डरती परन्तु इस टपके से मैं नहीं लड़ सकती (घर की छप्पर से टपकने वाली पानी की बूंदे)। उसी समय जंगल का शेर शिकार की तलाश में भटकता हुआ गाँव में आ गया। जिस समय बूढ़ी दादी बड़बड़ा रही थी संयोगवश वह शेर



उसके घर के पीछे ही बैठ कर आराम कर रहा था। शेर ने सोचा यह बूढ़ी महिला बीमारी से लड़ सकती है, गरीबी से लड़ सकती है शेर से भी नहीं डरती परन्तु टपके से बहुत डरती है, लगता है यह टपका मुझसे भी ज्यादा ताकतवर है आज उसको देखकर ही जाऊंगा। यह सोच कर वह बूढ़ी दादी के घर के पीछे बैठ कर इन्तजार करने लगा।



संयोगवश खराब मौसम में गाँव के कुम्हार का गधा घर से कहीं बाहर चला गया। कुम्हार उसे ढूंढने के लिए गांव में गया। सभी जगह ढूंढने पर उसे जब गधा नहीं मिला तो कुम्हार को बहुत गुस्सा आ गया। फिर वह एक मोटा सा डंडा लेकर दुबारा गधे को ढूंढ़ने निकला तथा सोचा कि देखता हूं बूढ़ी माता के घर के पीछे जो घास खड़ी है वह वहीं तो नहीं चर रहा। अंधेरे में कुम्हार शेर को गधा समझ बैठा तथा उसने उस पर अपना गुस्सा उतारने की सोची। कुम्हार चुपके से शेर के पीछे से आकर उस पर सवार हो गया तथा गर्दन के बाल पकड़कर डंडा मारना शुरू कर दिया। शेर की हालत खराब। उसने सोचा शायद यही टपका है। शेर काफी घबरा गया तथा जंगल की तरफ भागा। कुम्हार और अधिक गुस्से में आ गया तथा जोर जोर से डंडा मारने लगा। जंगल में कुछ साफ जगह आयी, उसी समय जोर से बिजली कड़की तब कुम्हार ने देखा मैं अपने गधे पर नहीं बैंठा हूँ, मैं तो शेर पर बैठा हूं। कुम्हार बहुत घबरा गया तथा शेर से मुक्ति पाने का उपाय सोचने लगा। थोड़ी दूरी पर ही एक बड़ा सा बरगद का पेड़ आया शेर उसी के नीचे से टपके से मुक्ति पाने के लिए दौड़ा। जैसे ही शेर बरगद के नीचे पहुंचा कुम्हार ने बरगद की शाखा पकड़ी तथा पेड़ के उपरी शाखा पर जा बैठा तथा अपनी जान बचाई। इस प्रकार शेर और कुम्हार दोनों ही एक दूसरे से मुक्ति पा गये। शेर टपके की ताकत समझ गया, काश वह जान पाता कि टपका कोई ताकतवर प्राणी नहीं है बल्कि गरीबों को सताने वाली एक बरसाती मुसीबत है। हमारे राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द ने भी टपके की ताकत को महसूस किया है जैसा कि उन्होंने अपने शब्दों में गांव की अपनी जिन्दगी के बारे में कहा है। ''गांव की जिन्दगी बड़ी कठिन है, बरसात में बाढ़, गरमी में पानी की कमी से लोग जूझ रहे हैं जिसके कारण शहरों की तरफ पलायन हो रहा है।''

बाढ़ और पानी की कमी से यदि मुक्ति पानी है तो इन्तजामकर्ताओं को फिर गांवों की तरफ जाना होगा। पुराने समय में गांवों में बहुत तालाब पोखर आदि होते थे जो बरसात के अधिकतर पानी को अपने में समेट लेते थे तथा गरमी भर गांवों के पशुओं के लिए पानी तथा छोटी सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराते थे। उन तालाबों तथा पोखरों को पुनः जीवित करना होगा जिनमें मछली पालन के कार्य को उद्योग के रूप में स्थापित करना होगा। इससे गांवों में रोजगार पैदा होंगे तथा पशुओं को पानी तथा खेती के लिए पानी उपलब्ध होगा, जिससे पलायन रुकेगा तथा गरीबी पर किसी हद तक काबू पाया जा सकेगा।

# सेवा पुस्तिका: एक महत्वपूर्ण अभिलेख



**विनोद कुमार शर्मा**
वरिष्ठ लेखाधिकारी

किसी भी सरकारी अधिकारी/कर्मचारी के संबंध में सेवा पुस्तिका एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अभिलेख है। सेवा पुस्तिका में प्रत्येक कार्मिक की नियुक्ति तिथि से लेकर सेवानिवृत्ति की तिथि तक की समस्त घटनाओं, जैसे कि प्रोन्नति, अवनति, परीक्षा उत्तीर्ण करना, प्रतिनियुक्ति, पारस्परिक स्थानांतरण, प्रत्यावर्तन, स्थायीकरण, सेवा से निलम्बन तथा लघु शास्ति/दीर्घ शास्ति दण्ड आदि का, नियमानुसार उल्लेख किया जाता है।

> *"सेवा पुस्तिकाओं के सम्यक् रख–रखाव के बारे में विस्तृत जानकारी देता तथ्यपूर्ण आलेख"*

सेवा पुस्तिका के भाग–1 की प्रविष्टियां सरकारी कर्मचारी की प्रथम नियुक्ति के समय ही की जाती है। इस संबंध में सेवा पुस्तिका के भाग–1 में कर्मचारी के जीवन वृत का पूर्ण उल्लेख किया जाता है जिसके अन्तर्गत सरकारी कर्मचारी का पूरा नाम, घर का स्थायी पता (जोकि भविष्य में गृह नगर यात्रा रियायत हेतु अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रविष्टि है), पिता या पति का नाम, राष्ट्रीयता, यदि कर्मचारी अनुसूचित जाति/जनजाति या पिछड़ा वर्ग सम्बन्धित है तो उसका विवरण, जन्म तिथि (अंको एवं शब्दों में), शैक्षिक योग्यता, वास्तविक कद, कर्मचारी की पहचान का वैयक्तिक चिन्ह (जैसा कि मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा प्रमाणित किया गया हो), प्रथम नियुक्ति के समय सरकारी कर्मचारी के हस्ताक्षर तथा सरकारी कर्मचारी के अंगुलियों के निशान, जिसके अन्तर्गत चारों अंगुलियों यथा कनिष्ठा, अनामिका, मध्यमा एवं तर्जनी सम्मिलित हैं, लिये जाते हैं। सरकारी कर्मचारी का फोटोग्राफ तथा अन्य सभी प्रविष्टियाँ कार्यालयाध्यक्ष या प्रमाणित करने वाले अन्य अधिकारी द्वारा अपनी मुहर एवं दिनांकित हस्ताक्षर द्वारा प्रमाणित की जाती है।

सेवा पुस्तिका में समय–समय पर सरकारी कर्मचारी का पद नाम तथा उसका वेतनमान तथा अन्य कोई भत्ते, जो देय हो, का नियमानुसार उल्लेख किया जाना चाहिए। सेवा पुस्तिका में कर्मचारी द्वारा समय–समय पर लिये गये अवकाश का विवरण अंकित किया जाना चाहिए। उक्त अंकन निर्धारित प्रारूप में किया जाता है जिसके लिए फार्म–2 निर्धारित प्रारूप है। उक्त प्रारूप में प्रत्येक अवकाश यथा अर्जित अवकाश, अर्द्धवेतन अवकाश, लघुकृत अवकाश/असाधारण अवकाश सम्मिलित है, उचित कॉलम में दर्शाया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि अवकाश लेखे में समस्त प्रविष्ठियाँ निर्धारित कॉलम के अन्तर्गत ही की गई हों।

सेवा पुस्तिकाओं को कार्यालाध्यक्ष के नियंत्रण में सुरक्षित रूप से रखा जाना चाहिए। प्रत्येक सरकारी कर्मचारी को प्रतिवर्ष सेवा पुस्तिका दिखाने के पश्चात सम्बन्धित कर्मचारी के हस्ताक्षर प्राप्त किए जाने चाहिए। सम्बन्धित सरकारी कर्मचारी का दायित्व बनता है कि वह सेवा पुस्तिका की प्रविष्टियों की भली–भांति जांच कर ले तथा यदि कोई विसंगति प्रकाश में आती है तो उसे कार्यालयाध्यक्ष/सक्षम प्राधिकारी के संज्ञान में लाया जाना चाहिए। यदि किसी प्रविष्टि में संशोधन अपेक्षित हो तो, उसे शुद्ध करके सक्षम प्राधिकारी को अपने स्तर से यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि सेवा पुस्तिका में की गई कोई भी प्रविष्टि मिटाई या अन्य प्रकार से विकृत तो नहीं की गई है तथा प्रत्येक प्रविष्टि स्पष्ट हैं तथा यथा आवश्यक सक्षम प्राधिकारी द्वारा अभिप्रमाणित/साक्ष्यांकित की गई है।

कहानी

# परोपकार



**रामबीर सिंह**
वरिष्ठ लेखाधिकारी

धनिक लाल का पुत्र माणिक लाल ग्यारहवीं कक्षा का छात्र था। वह बहुत ही तीव्र बुद्धि, पढ़ने में सबसे तेज था लेकिन अपनी कक्षा में सबसे ज्यादा उद्दण्ड भी था। एक दिन स्कूल की छुट्टी के बाद उसे एक गुरूजी (शिक्षक) मिले जो सेवानिवृत्त हो चुके थे और शहर से घरेलू सामान लेकर घर लौट रहे थे। रास्ते में उसने देखा कि टूटी–फूटी कुटिया के पास कपड़े की एक छोटी सी पोटली पड़ी हुई है और नजदीक ही, पेड़ पर चढ़ा एक मजदूर लकड़ी काट रहा है। मजदूर की पोटली को देखकर माणिक लाल का शरारती स्वभाव जागा और उसने अपने गुरूजी से कहा कि हम इसकी पोटली लेकर झाड़ी में छुप जाते हैं तब आप देखना कितना मजा आयेगा। गुरूजी ने कुछ पल विचारने के बाद कहा कि नहीं, हम ऐसा करते हैं इसकी पोटली में कुछ रूपये रख देते हैं और छुप जाते हैं तब इसकी प्रतिक्रिया देखना।

> ***"व्यवहारमूलक तरीके से परोपकार की महत्ता का प्रतिपादन करते गुरू की शिष्य को अनमोल सीख है कहानी 'परोपकार'"***

माणिक लाल ने गुरूजी की सलाह मानकर उसने गुरूजी द्वारा प्रदत्त कुछ रूपये उस पोटली में रख दिये और नजदीक की झाड़ी में छुप गये। मजदूर ने अपना काम खत्म किया और पेड़ से उतरकर हाथ मुँह धोये और खाना खाने के लिए पोटली खोलना शुरू किया। पोटली खोलने पर उसे रूखी–सूखी रोटियों के साथ रूपये भी मिले तो वह विस्मय में पड़ गया। उसने दाँये–बाँयें देखा लेकिन दूर–दूर तक कोई नजर नहीं आया। वह भाव–विभोर हो गया, उसकी आँखों से अश्रु धारा बह निकली। कुछ देर तक उसका दिमाग विचलित होता रहा, उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। थक–हारकर उसने सभी रूपये अपनी जेब में रख लिये और आसमान की ओर देखकर धन्यवाद की मुद्रा में कहा, हे ईश्वर–आपका और आपके द्वारा भेजे गये उस रहमदिल इन्सान का मैं कृतज्ञ हूँ जिसने मेरी पोटली में ये पैसे रखे। इन पैसों से मैं अपनी बीमार पत्नी का इलाज करा सकूँगा और बच्चों को भर–पेट भोजन खिलाऊँगा जो मुझे कभी नसीब नहीं हुआ। मजदूर की इन बातों को झाड़ी में छिपे दोनों गुरू–शिष्य सुन रहे थे। गुरू ने शिष्य से कहा कि बेटा मुझे यह बताओ कि तुम्हें इस मजदूर की पोटली चुराने में या उसकी पोटली में रूपये रखने में से किस में ज्यादा सन्तोष प्राप्त हुआ। माणिक लाल स्तब्ध खड़ा था। मजदूर की बातें सुनकर उसकी उद्दण्डता/शरारत का भूत उतर चुका था। वह बोला कि गुरूजी आपने मेरी आँखें खोल दी। जो बात मैं पहले कभी नहीं समझ सका, आज बहुत अच्छी तरह समझ गया हूँ कि आनन्द, किसी कमजोर, निर्धन व अशक्त को अनावश्यक अपने क्षणिक आनन्द के लिए दुःख देने में नहीं है अपितु उसकी ईश्वर के प्रति आस्था विश्वास और भावनाओं का सम्मान करने में है।



निस्सन्देह, परोपकार वह इत्र है जिसे जितना अधिक आप दूसरों पर छिड़कोगे, उतने ही सुगन्धित आप स्वयं होगें।

गांधी पार्क मसूरी से करीब 6 किलोमीटर दूर स्थित जॉर्ज एवरेस्ट चोटी को सैलानियों में खूब आकर्षण है। सुनहरे रंग में डूबी यह पहाड़ी न केवल अपनी छटांओं से यहां आने वालों का मन मोह लेती है, बल्कि उनसे बार–बार रूबरू होने और दीदार करने का वादा भी ले लेती है।



छायाकार: रवि सिन्हा,
वरिष्ठ लेखाकार

# ईश्वर–एक सोच



**ओमप्रकाश**
वरिष्ठ लेखाधिकारी

ब्रह्माण्ड में अरबों–खरबों आकाशगंगाओं के क्लस्टर हैं। हर क्लस्टर में न जाने कितनी आकाशगंगाऐं हैं। हर आकाशगंगा में अरबों–खरबों तारे हैं तथा उनके न जाने कितने ग्रह हैं। हमारी आकाशगंगा मिल्की वे में अरबों–खरबों तारों के अनगिनत ग्रहों में हमारे ग्रह पृथ्वी के छोटे से प्राणी हम हैं। जब हम कल्पना करते हैं कि इतने बड़े ब्रह्माण्ड को इतने तरीके से संचालित करने वाली कौन शक्ति है। कहीं वही शक्ति ही तो ईश्वर नहीं है यदि ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाली वही शक्ति ईश्वर है तो इसकी कल्पना करना ही कितना विस्तृत है, अनोखा है। ईश्वर किस तरह से इतने अकल्पनीय ब्रहमाण्ड का संचालन करता होगा। यह सोच ही ईश्वर के स्वरूप को कितना महान् महसूस कराती है।

> *"अनन्त विस्तारित ब्रह्माण्ड में अपने अस्तित्व की तलाश में निकले व्यक्ति को ईश्वरीय सत्ता से निकटता और पूर्णता का अनुभव कराता एक विचारपूर्ण आलेख"*

हमारे विद्वान मनीषी यह कहते हैं कि ईश्वर अजन्मा है वह कण कण में विद्यमान है वह हर आत्मा की पुकार सुनता है। कभी कभी मन में यह विचार उठता है कि यदि ईश्वर अजन्मा है तो हमारे ग्रह पर ईश्वर के नाम से प्रख्यात महापुरूष जैसे राम, कृष्ण, महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, ईसा मसीह, मोहम्मद साहब तथा समाज में अन्य ईश्वर का दर्जा प्राप्त महापुरूष कौन हैं, क्या ये सब ईश्वर नहीं हैं। फिर मन में एक विचार और उठता है कि हनुमान जी ने किस तरह से सूरज को मुंह में ले लिया था तथा किस तरह से भगवान कृष्ण ने किस प्रकार माता यशोदा को अपने मुँह में समूची पृथ्वी को दिखा दिया था तथा ईसा मसीह किस प्रकार सूली पर लटकने के बाद भी जिन्दा हो उठे। इसी प्रकार मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि मोहम्मद साहब, गुरू नानक देव साहब जैसे महात्मा कौन से ईश्वर का रूप थे, ईश्वरीय गुण तो उनमें भी थे।



हमारे सनातन समाज में तो सूर्य, चन्द्रमा, सौर मण्डल में विद्यमान सभी ग्रहों तथा वायु, जल आदि सभी को ईश्वर का दर्जा दिया जाता है। यहां तक कि पत्थर तथा तुलसी, पीपल आदि को भी ईश्वर का स्वरूप मानते हुए उनकी भी पूजा की जाती है। हमारी



पृथ्वी के अलावा भी तो ब्रह्माण्ड में कहीं न कहीं कोई ऐसा ग्रह होगा जिस पर जीवन होगा या हो सकता है, कि अनेक ग्रह ऐसे हों जिन पर जीवन हो। वे भी तो ईश्वर के किसी न किसी स्वरूप को अंगीकार करते होंगे। फिर ऐसा लगने लगता है कि जीवन देने वाले के साथ ही जीवन का पोषण करने वाले तथा जीवन का संहार करने वाले तत्व सभी ईश्वर का कोई न कोई रूप है। जिनके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वे ईश्वर के ही तो रूप हैं जैसे सूर्य, चन्द्रमा, वायु, ग्रह आदि। जीवन का पोषण करने वाले या जीवात्मा को अंधेरे से निकाल कर उजाले की ओर ले जाने वाले महापुरूष जैसे राम, कृष्ण, हनुमान जी, ईसा मसीह, महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, मोहम्मद साहब तथा गुरू नानक देव साहब आदि सभी ईश्वर ही तो हैं जिन्होने मानव को जीवन जीने की कला सिखाई।

कल्पना की जाये यदि सूरज और चन्द्रमा न होते तो क्या जीवन होता? निश्चित रूप से नहीं होता। सूरज यदि 15 दिन न चमके तो प्रकृति नष्ट हो जायेगी। प्रकृति नष्ट होते ही प्राण देने वाली वायु नष्ट हो जायेगी और जीवन भी नष्ट हो जाएगा। इसी लिए इनकी पूजा की जाती है। अब समझ में आ रहा है कि छठ पर सूर्य के उगने तथा अस्त होने के दोनो स्वरूपों की पूजा क्यों की जाती है। सूर्य हमारा प्रथम ईश्वर है जिसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इससे यही लगता है कि ईश्वर के सभी रूप जीवन के लिए अनिवार्य हैं किसी एक के बिना कड़ी टूट जायेगी तो दूसरा स्वतः ही समाप्त हो जायेगा। मनुष्य के द्वारा मान्यता प्राप्त ईश्वर के सभी स्वरूप सत्य हैं तथा अनिवार्य हैं जिनके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

मनुष्य भी ईश्वर की ही एक कृति है जिसके अन्दर ईश्वरीय गुण भरे पड़े हैं बस पहचानने की जरूरत है। भगवान राम, भगवान कृष्ण, हनुमान जी, मोहम्मद साहब, गुरू नानक देव साहब आदि सभी मनुष्य ही तो थे पर अपने सद्गुणों के कारण उन्होने ईश्वर का दर्जा प्राप्त कर लिया।

मेरा तो मानना है कि किसी व्यक्ति की पूजा न करके उसके सद्गुणों की पूजा की जानी चाहिए। हर मनुष्य के अन्दर ईश्वर का वास है अच्छे कर्म करने वाले मनुष्य आज भी ईश्वर के रूप में मान्यता प्राप्त कर ही लेते हैं।

आलेख

# सरकारी कामकाज में हिंदी: झिझक दूर करने की आवश्यकता



**विनोद कुमार शर्मा**
वरिष्ठ लेखाधिकारी

सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है, निःसन्देह यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है, लेकिन अभी भी अपेक्षित सफलता नहीं मिली है। सरकारी कामकाज में हिंदी ने अपनी गहरी पैठ बना ली है, यह उसी दिन निश्चित रूप से कहा जा सकता है जिस दिन समस्त सरकारी कामकाज जनसाधारण की भाषा, अर्थात हिंदी में, होने लगेगा। जनसाधारण की भाषा में कार्य होने से विकास भी द्रुत गति से होगा तथा समस्त सरकारी कामकाज की पहुँच आम जनता तक होने से शासन–प्रशासन के कार्यों में भी और अधिक पारदर्शिता आयेगी। समस्त सरकारी कामकाज हिंदी में होने से जनसाधारण के लिए सरकारी योजनाओं को समझना सरल होगा। साथ ही जनता की भाषा में कार्य होने से विभिन्न सरकारी योजनाओं में आम–जनों की भागीदारी भी बढ़ेगी। जनसाधारण की अधिक से अधिक भागीदारी बढ़ने से, पात्रलोगों को ही सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त होगा, जो निश्चित रूप से अन्ततः देश के विकास की गति को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होकर सरकारी योजनाओं की सफलता की गारंटी भी होगा।

> ***"राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न स्तरों पर आवश्यक प्रयासों का एक सम्यक् विवेचन प्रस्तुत करता है यह आलेख"***

राजभाषा विभाग द्वारा सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हर सम्भव प्रयास किये जा रहे हैं। उक्त प्रयासों के क्रम में ही वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा अत्यन्त सुविचारित एवं सुव्यवस्थित तरीके से हिंदी के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों का निराकरण करने के उद्देश्य से प्रमाणिक शब्दकोष को जारी किया गया है। आयोग द्वारा सभी वैज्ञानिक, तकनीकी एवं अन्य शब्दों सहित सरकारी कामकाज में रोजाना प्रयुक्त होने वाले शब्दों को समाहित करके हिंदी–अंग्रेजी एवं अंग्रेजी–हिंदी शब्दावली को जारी किया गया है, जोकि एक व्यापक प्रामाणिक शब्दकोष होने के साथ ही कार्यालय में रोजमर्रा के कामकाज के लिए अत्यन्त सुगम एवं सरल है। ऐसे सभी कार्मिक जो अपना कामकाज हिंदी में करने में कठिनाई अनुभव करते हैं, के लिए उक्त शब्दकोष निश्चित रूप से अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो रहा है।




वर्तमान समय में हमारे देश में हिंदी के प्रति उत्साहजनक वातावरण है तथा हिंदी में कामकाज के प्रति लोगों का रूझान तेजी के साथ बढ़ रहा है। यह हमारे लिए प्रेरणा का विषय है कि उच्च पदों पर बैठे व्यक्ति भी

हिंदी बोलने तथा अपना कार्य हिंदी में करने में गौरव की अनुभूति करते हैं। सरकारी कामकाज अधिक से अधिक हिंदी में हो, इसके लिए आवश्यक है कि हम हिंदी में कामकाज करने में झिझक, यदि कोई हो तो, उसका त्याग करें। हिंदी में बोलने एवं अपना कार्य हिंदी में करने में झिझक कैसी? हिंदी पढ़ने एवं लिखने का अच्छा ज्ञान रखने के बावजूद सरकारी कामकाज अंग्रेजी में करने में कैसा गौरव? सामाजिक स्तर पर भी कई बार यह स्थिति देखने में आती है कि समाज में अग्रेजी बोलने वाले व्यक्ति को ही शिक्षित व्यक्ति की श्रेणी में माना जाता है। यह अच्छी मानसिकता का द्योतक नहीं है तथा इसको निःसंकोच त्यागने की आवश्यकता है। जहाँ तक सरकारी कामकाज हिंदी में करने का प्रश्न है, समस्त विभागों/कार्यालयों में उच्च प्रशासनिक अधिकारियों को हिंदी में पत्राचार, फाइलों में हिंदी में टिप्पणी तथा व्याख्यान आदि, निर्बाध रूप से उत्साहपूर्वक करना चाहिए। इसमें किसी तरह का संकोच, झिझक या हीनता का भाव तनिक भी नहीं होना चाहिए। जब तक विभिन्न विभागों में उच्च पदस्थ अधिकारीगण नीचे के स्तर पर कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रेरित नहीं करेंगे, राजभाषा हिंदी सरकारी कामकाज में अपेक्षित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकेगी। भाषा, सरकार एवं जनता के बीच एक सेतु का काम करती है। लोकतन्त्र में सरकार एवं आम जनता के मध्य बेहतर तालमेल एवं प्रभावी तरीके से प्रशासनिक संपर्क हेतु भी सरकारी क्षेत्र में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग किया जाना आवश्यक है।

उपरोक्त स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक है कि यदि किसी स्तर पर अभी भी सरकारी कामकाज अंग्रेजी में किया जा रहा है तो इसे यथासम्भव कम से कम करके हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। सरकारी कार्य–व्यवहार में जन–सामान्य में प्रचलित शब्दों के प्रयोग पर बल दिया जाना चाहिए जिससे कि अधिक से अधिक सरकारी कामकाज हिंदी भाषा में हो। आइये हम सभी लोग यह निश्चय करें कि हम अपना सभी सरकारी कामकाज हिंदी में, अर्थात आम जनता की भाषा में, करके राजभाषा हिंदी के प्रसार में भागीदार बनेंगे।



कविता

# नियति



**प्रशांत जोशी**
लेखाकार

नियति के फेर में सारा जगत समाया।
देने वाला राम, वो दे जितना उतना ही पाया।
दुनिया में रहकर करते सब प्रयास।
देने वाला राम, पूरी होगी हर आस।
जीवन में हार से क्यों होता निराश।
देने वाला राम, पूरी होगी हर आस।
जीवन में हार कर फिर से कर प्रयास।
देने वाला राम, पूरी होगी हर आस।

# सलोना-उत्तराखण्ड



**अजय कुमार पाल**
सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ)

पर्वत से मैदानों तक कह रहा है कोना–कोना,
उत्तराखण्ड तेरा रूप सलोना, उत्तराखण्ड तेरा रूप सलोना।
रंग–बिरंगे, हरित सुशोभित, फूल यहाँ की घाटी में,
धर्म–कर्म, आध्यात्म है बिखरा, देवभूमि की माटी में,
शिष्टाचार, आतिथ्य, नयापन, दिखता है परिपाटी में,
सस्य श्यामला धरा पर निखरा, है हरियाली का बिछौना,
उत्तराखण्ड तेरा रूप सलोना, उत्तराखण्ड तेरा रूप सलोना।

ताल–तलैया से लेकर, देवों का धाम विराजित है,
गंगा–यमुना के उद्गम से, हरि का द्वार श्रृंगारित है,
नदियों, झरनों की कल–कल से वन–जीवन गुंजारित है,
रजतशिला पर, सूर्य रश्मि से, जैसे बरस रहा है सोना,
उत्तराखण्ड तेरा रूप सलोना, उत्तराखण्ड तेरा रूप सलोना।

शीतल, सुंदर, स्वच्छ है जगती, हवा बहुत ही सुहानी है,
उत्तर की काशी है बसती, बसी पहाड़ों की रानी है,
पंच प्रयाग, अनेकों तीर्थ, अद्भुत ही इसकी कहानी है,
यहाँ झूम रहे हैं जंगल–जंगल, वन जीवों के छौना,
उत्तराखण्ड तेरा रूप सलोना, उत्तराखण्ड तेरा रूप सलोना।

पर्वत से मैंदानों तक कह रहा है कोना–कोना,
उत्तराखण्ड तेरा रूप सलोना, उत्तराखण्ड तेरा रूप सलोना।



लक्षमण झूला, ऋषिकेश



हरिद्वार में गंगा आरती का अनुपम दृश्य।

कविता

# कचरा

**के.के. नन्दा 'अश्क'**
कार्यालय महालेखाकार (ले0 एवं ह0) हरियाणा,
चण्डीगढ़ से सेवानिवृत्त केन्द्रीयकर्मी

यह डिब्बा कचरे का

क्या है इस में.....?

कचरा.....?

या एक नवजात शिशु का शव

कितना सुन्दर प्यारा

किस का है राज दुलारा

संसार में आते ही जिसे

मृत्यु का मिला सहारा।

क्या यह कचरा है मनुष्यता का,

प्यार का,

या फिर गन्दी वासनाओं का...?

आज प्यार मृत्यु की गोद में सो गया...

कैसी मां है वह....?

नौ मास पेट में पाला

और फिर कचरे में ला डाला।

कौन है इस हैवानियत का जिम्मेदार

मां....?

शायद नहीं.....

पिता.....?

जिस ने इसे अपनाने से कर दिया इन्कार,

या फिर समाज.....?

जो प्यार का फल सहन नहीं कर पाता।

जिस ने मजबूर कर दिया हो किसी को

इसे मारने पर

अपनी इज्जत की खातिर।

कुछ समझ नहीं पाता मैं

शायद हो जाऊं पागल

यह सोच–सोच कर

कि कौन है इस का हत्यारा

मां.....?

पिता.....?

या समाज.....?

कोई उत्तर

नहीं है मेरे पास

इस का उत्तर

शायद मिले भी न.....

न मुझे

न आप को

और न ही किसी और को.....

# प्रकृति और मानव



**डॉ0 दिनेश शर्मा**
वरिष्ठ लेखाकार

प्राचीन हिन्दू मान्यता के अनुसार इस सृष्टि के रचयिता 'विधाता' ने सृष्टि की रचना के लिए सर्वप्रथम एक ऐसा वातावरण बनाया जहाँ जीवन की संरचना हो सके। बाईबल के अनुसार परमेश्वर ने एक सुन्दर उद्यान की रचना की और उसमें प्रथम पुरूष और प्रथम स्त्री के रूप में 'आदम' और 'हव्वा' को मानव जीवन की रचना के लिए भेज दिया। जहाँ तक वैज्ञानिक मान्यता का प्रश्न है, उसके अनुसार विभिन्न रसायनिक प्रक्रियाओं से समुद्र में प्रथम कोशिका का निर्माण हुआ। और तब पेड़–पौधें जीव–जन्तु बनते चले गए।



प्रथम दृष्ट्या ये सभी तथ्य एक–दूसरे का परस्पर खण्डन करते प्रतीत होते हैं। भिन्न–भिन्न कालखण्डों में जीवन की उत्पत्ति के विषय में विभिन्न विचार–धाराएं और मान्यताएं बनीं, पर वे एकमत न हो सकीं। परन्तु इन सभी पर सम्यक् विचार करने पर एक बात तो सर्वनिष्ठ दृष्टिगोचर होती है। यह कि ''सर्वप्रथम एक ऐसा वातावरण अस्तित्व में आया, जो जल–वायु, भूमि–आकाश, पेड़–पौधों, पवर्त–नदियों और अन्यान्य जड़ पदार्थों का एक सुन्दर–सुनियोजित समुच्चय था।'' यह पूरा वातावरण जीव व जीवन की उत्पत्ति के लिए पूर्णतः अनुकूल था। प्रत्येक मान्यता ने अनेकता में एकता का परिचय देते हुए, इस वातावरण को प्रकृति के नाम से स्वीकार किया है।

प्रकृति जैसे आदि और गरिमामंडित शब्द की महानता का आकलन करने के लिए प्रथमतः इस शब्द का शाब्दिक अर्थ समझना उचित होगा। प्रकृति शब्द की व्युत्पत्ति कृति शब्द–संज्ञा में 'प्र' उपसर्ग के योग से होती है।

**प्र + कृति = प्रकृति**

'प्र' का अर्थ विशेष से होता है और यहाँ हम इसे प्राचीन अर्थ में भी ले सकते हैं। 'कृति' का तात्पर्य रचना से होता है। इस प्रकार प्रकृति का अर्थ ''विशेष और प्राचीन रचना'' है। इस समस्त चराचर जगत में जितने भी पदार्थ दृष्टिगोचर होते हैं उन सबकी समष्टि ही प्रकृति है। प्रकृति एक सुन्दर समूह है, संसार में विद्यमान प्रत्येक अवयव का। प्रकृति की परिभाषा से बँधा हुआ है, सूक्ष्म से सूक्ष्मतम् कण और प्रकृति से ही परिभषित होता है दनन्त विस्तारित गगन। हम सभी प्रकृति के ही एक अंगमात्र हैं। जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मैं स्वयं को प्रकृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग मानता हूँ और प्रत्येक मानव को ऐसा मानना चाहिए। क्योंकि मानव इस प्रकृति के समस्त जड़–चेतन अवयवों में सर्वाधिक विवेकशील, बुद्धिजीवी और सुव्यवस्थित सामाजिक प्राणी है। भारतीय दर्शन शास्त्र में भी इन अवयवों को प्रकृति–पुरूष–पदार्थ संज्ञाओं में वर्गीकृत किया गया है।

> *"बढ़ती प्राकृतिक आपदाओं के वर्तमान परिदृश्य को प्रकृति की चेतावनी की तरह लेते हुए प्रकृति के साथ सामंजस्य की आवश्यकता को रेखांकित करता आलेख"*

यदि परमात्मा का कोई अस्तित्व है तो उसने भी मानव के रूप में अपनी



अन्तिम रचना का निर्माण किया, उसे अपने समान विवेक प्रदान किया और आगे की रचना का दायित्व मानव को प्रदान कर यह विशाल प्रकृति उसके हवाले कर दी। और यदि परमात्मा नहीं भी है, तो प्रकृति ने स्वयं अपने अनन्त तक विस्तारित साम्राज्य की सभी व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से चलायमान बनाए रखने के लिए मानव को आकाश–सा गाम्भीर्य, सागर–जैसा गहरा विवेक, पृथ्वी–तुल्य धैर्य और काँटे–सरीखी तीक्ष्ण बुद्धि प्रदान की। कहने का तात्पर्य यह है कि मानव को प्रकृति में एक विशिष्ट स्थान मिला।

शनैः–शनैः समय बीतता गया मनुष्य ने अपनी बुद्धि और अपने बल का सदुपयोग करते हुए, प्रकृति का विकास करना प्रारम्भ किया। नए–नए प्रयोगों और नई–नई खोजों–पहिया, आग, घर, अन्न, कपड़े, पीतल, से लेकर हवाई जहाज और कम्प्यूटर जैसे आविष्कारों के साथ मानव ने स्वयं को सृष्टि की महानतम् कृति के रूप में सफलतापूर्वक स्थापित किया। तभी अकस्मात् मानव में एक परिवर्तन आया। उसकी भौतिक चाह बढ़ने लगी और नित–नए सुखों की लालसा में उसने प्रकृति का अंधाधुन्ध दोहन प्रारम्भ कर दिया।

प्रकृति जो मानव को एक धरोहर एक विरासत के रूप में मिली थी, वह उसका रक्षण छोड़ भक्षण की ओर उन्मुख हो चला। और साथ ही अपनी बढ़ती जिज्ञासा शान्त करने के लिए मानव ने प्रकृति के विभिन्न पहलुओं पर क्रूरतम् प्रयोग करने प्रारम्भ कर दिए। इस तरह अपने लिए बेहतरीन साधन जुटाने पर आमादा मानव प्रकृति के लिए विनाशकारी सिद्ध होने लगा। और इसके बाद सृष्टि की इस सुन्दर कहानी में एक काला अध्याय प्रारम्भ हो गया जिसको 'प्रकृति में मानव का हस्तक्षेप' शीर्षक देना उचित जान पड़ता है। स्वार्थपरता की इस कुत्सित विचारधारा के चलते आज स्थिति नियन्त्रण से बाहर होने लगी है। आखिर प्रकृति भी सर्वशक्तिसम्पन्न है, तो वह स्वयं पर मानव की इस तानाशाही को क्यों सहन करें? परिणाम स्वरूप प्रकृति ने भी मानव को अपना विनाशक रूप दिखाने की ठान ली है। प्रकृति के अवयवों ने एकजुट होकर 'शठे शाठ्यम् समाचरेत्' की नीति का अनुशीलन करते हुए अपना रोष प्रकट करने के लिए हिंसक मार्ग अपना लिया है। नदियों ने बाढ़ का कहर बरपा कर, भूमि ने भूकम्प को अस्त्र बनाकर, आकाश ने सूखा लाकर मानव के विरूद्ध अपना विध्वंसक अभियान प्रारम्भ कर दिया है। प्राकृतिक आपदाओं का वर्तमान दौर, मात्र सामान्य प्राकृतिक आपदाओं या अकस्मात् दुर्घटनाओं के क्षणिक दुःख का नहीं है। अपितु यह प्रारम्भ मात्र है, एक विनाशकारी भविष्य का।

यदि मानव इन प्राकृतिक चेतावनियों को समझ सके तो, पुनः प्रकृति और मानव के मध्य संधि का कोई मार्ग निकल सकता है। यदि मानव 'जियो और जीने दो' की भावना को सिद्धान्त रुप में अंगीकार कर ले तो प्रकृति भी मानव के साथ सामंजस्य को पुनर्स्थापित कर सकती है। हमें केवल अपनी कुछ भौतिक लालसाओं पर नियंत्रण करना होगा और मैं समझता हूँ कि हमारे यह अगली पीढ़ी को दर्दनाक मौत की सौगात देने से कठिन नहीं होगा।

अपनी सभ्यता और अस्तित्व को बचाने के लिए मानव के पास समय अधिक नहीं है। शीघ्रातिशीघ्र प्रकृति के प्रति सहानुभूति और तादात्म्य की आवश्यकता है। कहीं हमारी यह नासमझी मानव–सभ्यता को पृथ्वी का इतिहास न बना दें, उस डाईनासोर की तरह। और इसका निर्णय भी आपके–हमारे हाथ में ही है।

कविता

# अपने बड़े



**प्रविन्द्र सिंह तोमर**
डी0ई0ओ0

इस पथ पर, न उस पथ पर।

सागर में न अम्बर पर,

वृद्धों को उनके घर पर,

कोई गम न हो।

कुरू की इस भू पर

कोई वृद्धाश्रम न हो।

हम उनके अतीत है,

हम उनके व्यतीत है,

हम अपूर्ण हैं, वे पूर्ण हैं,

उनसे ही ये जंगल सम्पूर्ण है।

पाश्चात्य के प्रभाव से

अपने संस्कार कम न हो।

कृष्ण की इस भू पर

कोई वृद्धाश्रम न हो।

वे भी वीरों में वीर थे।

हष्ट–पुष्ट उनके शरीर थे,

हमारे पालन–पोषण में वे,

बड़े गम्भीर थे।

वृद्ध न होंगे हम

ऐसा कोई भ्रम न हो,

भारत की इस भू पर,

कोई वृद्धाश्रम न हो,

आज कर्कश तन लिये,

अहसास उनका जीवन है,

आखों आंखों में एक प्रश्न लिये

खिन्न उनका मन है।

जिसके लिये पूरा मन दिया

जिनको उसने ये जीवन दिया

जीवन सागर में अकेला छोड़ गये

अपने कर्त्तव्यों से मुख मोड़ गये।

करो कुछ ऐसा कि

कहीं अधर्म न हो

सन्तों की इस भू पर

कोई वृद्धाश्रम न हो।

चाँदी अर्जन बहुत हुआ,

सोना अर्जन बहुत हुआ,

खुशहाली कैसे विराजे जहाँ,

मन बुजुर्गों को अर्पण न हो।

उनके प्रति अपना समपर्ण न हो।

दुख हो, सुख हो चाहे हो अन्त

परन्तु, विचलित हम न हो।

पितरों की इस भू पर

कोई वृद्धाश्रम न हो।



आलेख

# पाप से मुक्ति होती है
# गंगोत्री धाम में



**बृजभूषण सेमवाल**
लेखाकार

जो प्राणी श्रद्धा भक्ति भाव पूर्वक पतित पावनी माँ गंगा जी के मन्दिर का दर्शन करता है, वह प्राणी पाप और श्राप से मुक्त हो जाता है। उसका जीवन धन्य–धन्य हो जाता है। मन्दिर में प्रवेश करते ही शान्ति की अनुभूति प्राप्त होती है। वह प्राणी पुण्य का भागीदार बन जाता है। ऐसा है माँ गंगा जी का उद्गम् स्थान–गोमुख, जहाँ से गंगा भगीरथी के नाम से अवतरित होती है। इसका जल अमृत के समान है, जिसको पीने से ऐसा लगता है कि हमें स्वर्ग की अनुभूति हो रही है। इस धाम में भगीरथी जी का विशाल मन्दिर है। जिसमें माँ गंगा, माँ यमुना, माँ सरस्वती, माँ लक्ष्मी, माँ पार्वती तथा माँ अन्नपूर्णा की मूर्तियाँ स्थापित और उनके सामने महाराजा भगीरथ हाथ जोड़े हुऐ है। माँ गंगा जी का मन्दिर समुद्र तल से 3042 मीटर की ऊँचाई पर है। यह स्थान उत्तरकाशी से मात्र 100 कि0मी0 की दूरी पर है। मन्दिर के चारों ओर बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ, सुन्दर प्रकृति की छटा, अत्यन्त आकर्षक एवं मनोहारी दृश्य। यह स्थान देवदार के जंगल से ढका हुआ है। पुरी के नीचे केदार गंगा का संगम है और वहाँ नीचे ऊँचाई से माँ गंगा भोले बाबा के शिवलिंग पर गिरती हैं। माँ गंगा जी के मन्दिर के कपाट अप्रैल माह के अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर खुलते हैं। करोड़ों भक्तजन श्रृद्धालु, तीर्थ यात्री दर्शन करते हैं। अपनी मनोकामनायें लेकर आते हैं और खुशी–खुशी अपने घर जाते हैं। माँ गंगा जी के मंदिर कपाट शुभ दीपावली के दिन बन्द हो जाते है।

**माँ गंगा जी की महिमाः–**

अपने पूर्वजों पर लगे श्राप को मुक्त करने के लिये भोलेबाबा भगवान शंकर जी की कठिन तपस्या करके राजा भगीरथ जी ने माँ गंगा जी को प्राप्त किया था इससे गंगा नदी को भगीरथी के नाम जाना जाता है। भोलेबाबा जी माँ पार्वती जी से कहते है कि जो कलियुग में इस जगह पर स्नान, दर्शन या आचमन भी करेगा, वह बैकुण्ठ को प्राप्त करेगा, उसे मोक्ष की प्राप्ति होगी।

''तत्र वर्ष सहस्त्रश्च समाराध्य पुनः पुनः।
ब्रह्माणं शंकर जव्ह्नु भुवि गंगामयोजयत्''

(वशिष्ठ जी ने कहा था)

अर्थः– हजारों वर्षो तक ब्रह्मा शंकर तथा जह्नु ऋषि बार–बार तप करके राजा भगीरथ जी ने गंगा का पृथ्वी पर अवतरण कराया।



ततेतत् परमं ब्रह्मा द्रव रूप महेश्वरि
गंगा रूप यत् पुण्यतमं पृथिव्यामागत शिवे।
(स्कन्द पुराण में कहा गया)

अर्थः— गंगा, गंगा के नाम से द्रवरूप में प्रवाहित साक्षात् पर ब्रह्मा ही है। महापातकियों का उद्धार करने के लिये कृपा निधि परमात्मा ही पुण्यतम जल के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुयी है।

माँ गंगा जी को इस भूमि पर लाने के लिये राजा भगीरथ जी को श्रेय जाता है क्योंकि एक चक्रवर्ती राजा सागर थे इन्होंने अश्वमेघ के लिये घोड़ा छोड़ा था। अश्वमेघ को पूरा होने तथा अपने राज सिंहासन को जाते देखकर इन्द्र ने अश्वमेघ से घोड़ा चुराकर कपिल मुनि आश्रम में बाँध दिया। तब सागर के साठ हजार पुत्रों ने घोड़े को खोजने लगे खोजते–खोजते वे कपिल मुनि जी के आश्रम में चले गये। वहाँ घोड़ा देखकर कपिलमुनि को गालियाँ देने लगे उनका ध्यान भंग करने लगे। तब क्रोधित होकर कपिलमुनि जी ने सागर के साठ हजार पुत्रों को श्राप देकर भस्म कर दिया तब सागर राजा ने कपिल मुनि से अपने पुत्रों के लिये क्षमा याचना माँगी। तब कपिल मुनि ने कहा कि हे वत्स! स्वर्ग से इस जन्मभूमि पृथ्वी पर इस स्थान से होकर कोई गंगा को लायेगा, तब गंगा के स्पर्शलोक से तुम्हारे पुत्रों का उद्धार हो जायेगा। इस कुल में राजा भगीरथ का जन्म हुआ। उन्होंने अपने पितरो के उद्धार के लिए कैलाश पर्वत पर कठिन तपस्या की और माँ गंगा ने मृत्युलोक में आना स्वीकार किया। आकाश से गिरती गंगा का वेग शिवजी ने जटा में रोककर फिर वहाँ से चलकर पर्वतों को तोड़ती–फोड़ती उच्च पहाड़ियों की पंक्तियों के रास्ते उच्च स्वर के साथ बहती हुई, उछल–कूद करती हुई माँ गंगा गंगासागर के पास आकर कपिल के आश्रम में से होकर भगीरथ जी के पूर्वजों का उद्धार करते हुए समुद्र में जा मिली।

**गंगोत्री धाम में अन्य स्थान भी है।**

1. **गोमुखः**— यहाँ भागीरथ राजा का उद्गम स्थान है।
2. **भोजवासाः**— यहाँ भोज पत्र के पेड़ अत्यधिक है। इसे भोजन वासा भी कहा गया है यहाँ गढ़वाल मण्डल विकास निगम का गृह स्थान है। तथा निःशुल्क लंगर भी लगता है।
3. **चिर वासाः**— चीड़ के पेड़ो तथा चिरवासा पहाड़ियों के नाम यह स्थान है।
4. **केदारतालः**— यहाँ मनोहारी दृश्य शिव के उद्गम स्थान केदारताल नाम जानी जाती है।

यहाँ विभिन्न प्रकार के छोटे, बड़े होटल खाने पीने तथा रहने के लिए धर्मशाला है। यहाँ पहुंचने के लिये वायुमार्ग, सड़क मार्ग से पहुंचा जा सकता है। जीवन में एक बार माँ गंगा जी के दर्शनार्थ गंगोत्री धाम आयें पुण्य के भागीदार बनें तथा दर्शन करके बार–बार जन्ममृत्यु के बन्धन से मुक्त होकर मोक्ष की प्राप्ति करें।



कविता

# पापा



**प्रविन्द्र सिंह तोमर**
डी0ई0ओ0



पिता बैठा एकान्त में
करता रहता याद
ये ही मेरा बेटा
जिसके छोटे–छोटे थे हाथ।
छोटे–छोटे हाथ और पैर लड़खड़ाते थे,
गिरने से बचाने को हाथ बढ़ाते थे
जब पहली बार स्कूल गया था
मैं भी मन्द–मन्द मुस्काया था।
बड़ा होकर बड़ा होगा, सबको कह सुनाया था
पापा–पापा कह जब वो कन्धों पर चढ़ जाता था।
मेरे पापा सबसे अच्छे, कह सबसे लड़ जाता था।
मम्मी प्यारी या पापा प्यारे
इस विपत्ति में फँस जाता था,
पापा को मम्मी और मम्मी को पापा
कहकर हँस जाता था।
हुआ बड़ा, उसके विचार बढ़े,
उसके हाथ–पैर दो–चार बढ़े
अब पापा हो गये पुराने जमाने के
विचार लगने लगे उसे दो आने के।
जमाना उसके लिये हसीन हो गया।
पापा केवल ATM वाली मशीन हो गया।
दिन गुजरे, रातें गुजरी,
समय अपनी चाल चलता है,
पापा को पापा याद आए,
समझ आया बेटा कैसे पलता है।
मैंने ही तो एकान्त सिखाया,
अब एकान्त से घबराया हूँ।
बड़ा बनने की शिक्षा उसको
बचपन से सिखलाया हूँ।
मेरे सपनों के लिये, वो तेज दौड़ गया,
एकान्त के इस क्षण में बहुत पीछे छोड़ गया,
पौधे का दोष नहीं
फल देते पानी और खाद।
पिता बैठा एकान्त में
करता रहता याद।



# नव सृजन

कविता



**महावीर सिंह रावत**
सहायक लेखाधिकारी

उम्मीदों का सैलाब उमड़ रहा,
डिजास्टर मैनेजमेंट मुस्तैद रखना पड़ेगा।
सुनामी कहीं कहर न बरपाये,
तबाही के मंजर को रोकना पड़ेगा।।
आशाएं आसमां छू रही,
बिना बुनियाद के महल खड़ा करना पड़ेगा।
हश्र अब तक का भूल चुके,
बस! हाल फिलहाल का हिसाब देना पड़ेगा ।।
लगता है संयम सभी खो चुके,
उतावलेपन में नव–सृजन करना पड़ेगा।
कल की बातें भूली–बिसरी हो गई,
आज ही बीज बोया, आज ही फल खाना पड़ेगा।।
खुद को हमने कितना सुधारा,
यह यक्ष प्रश्न खुद से पूछना पड़ेगा।
हर इल्जाम गैरों के सिर मढ़े,
कभी इल्जाम खुद के सिर लेना पड़ेगा।।
मै इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता,
खुद तुम्हें इस प्रश्न का उत्तर देना पड़ेगा।
क्यों इतनी अभिलाषाएं पाल रखीं,
क्या पलक झपकतें हर अभिलाषा का उत्तर देना पड़ेगा।।
इतने वर्षों में क्या खोया क्या पाया,
यह तो खुद हमें सोचना पड़ेगा।
दुनियाँ कहाँ की कहाँ पहुँच चुकी,
क्या हमें अब भी गरीबी से ही जूझना पड़ेगा।।

# लौट आओ



**राम भरोसे कौशिक**
डी0ई0ओ0

मैं तो कहता हूँ लौट आओ।
बेरहम जमाने में इन मोतियों की कद्र कहाँ।
बहुत रो लिए लौट आओ,
रोक सका है कौन, जाने वाले को कभी।
कब तक पुकारोगे लौट आओ।।
जिनकी फितरत में ही है दगा और धोखे,
क्या उन्हें सुधारोगे लौट आओ।
देखो तो ये खाली सा आसमाँ,
कुछ कह रहा है तुम्हें,
कब तक रहोगे तन्हा? लौट आओ।
मैं तो कहता हूँ लौट आओ।
जला सकता है जो यह,
फूलों का बागवान,
तुम उसको सँवारोगे लौट आओ।
भोले हो तुम,
ढूँढते हो रेत में पानी,
प्यासे ही मर जाओगे लौट आओ।
होता अगर अपना,
तो यूँ जाता भला,
गैर था, उसे जाना ही था लौट आओ।
कब से नहीं है सोयीं,
ये मासूम सी आँखें,
कब तक इन्हें जगाओगे? लौट आओ।
जिस दिल से प्यार हो,
खुदा होता है उसमें,
कब तक उन्हें सताओगे? लौट आओ।
इतनी कमजोर थी क्या,
कि यूँ बिखर जाए मोहब्बत,
क्या कातिल को ही जिताओगे? लौट आओ।
मैं तो कहता हूँ लौट आओ,
बहुत भोले, हो तुम लौट आओ।



# किस ओर.....



**विक्रांत कुमार**
सहायक लेखाधिकारी

हे मानव जा रहा तू किस ओर,
इकट्ठा कर रहा अप्रत्यक्ष अनंत पाप।
भूल कर ये वरदानित मानवता,
तू निस दिन बन रहा एक अमिट श्राप।।
क्षणिक सुख पाने के खातिर,
करता अनर्थ हर ओर।
हे! मानव जा रहा तू किस ओर?
काम, क्रोध, मद और लोभ के वश में,
भूल गया तू मानवता का ज्ञान।
खुद को समझे सर्वोत्तम ज्ञानी,
पर है तू खुद से अनजान।।
एक छोटे से अहम् की खातिर
तोड़ी तूने ये चरित्र की डोर।
हे मानव जा रहा तू किस ओर।।
अर्थ को अनर्थ कर देता,
कर्मों को व्यर्थ कर देता।
निर्लज्ज होकर करता पाप,
वैसे करता हरी का जाप।
भूल कर सभी सत्कर्मों को,
भाग रहा बस धन की ओर।
हे मानव तू जा रहा किस ओर।।

कविता

# नूरे-चश्म को शिकार बनाया



**महावीर सिंह रावत**
सहायक लेखाधिकारी

अल्लाह–ईश्वर ने इंसान बनाया,
आखिर इंसान बनाया किसलिए?
इंसान में इंसानियत आयेगी,
शायद, बनाया इंसान इसलिए।

चौरासी लाख योनियां बितायी,
कीट–पंतगे अजगर बनके।
मुश्किल से जीवन इंसान का मिला,
न जिये, हिसंक पशु बनके।
सीने में दिल है सबका,
महसूस कर दिल में दर्द कितना?
एक खरोच जिस्म आयेगी,
कराह उठेगा दिल कितना?

कितने मासूमों का खून बहाया,
सोचने का वक्त है, क्या इतना?
आलीम से शायद, पूछा नहीं,
कयामत में कफन मिलेगा कितना?

हाहाकार सारे जहां में मचायी,
इंसान का लहू, पानी समझ बहाया।
अल्लाह–ईश्वर की औलाद होकर,
इंसान के तू, कहां काम आया।

पूछ लेता अल्लाह–ईश्वर से,
जिसने हमे जहां में इंसान बनाया।
जन्नत नूर कैसे नसीब होगी,
तूने नूरे–चश्म को शिकार बनाया।

# गुफ़्तगू....

संस्मरण



**शिवम लिल्हौरी**
लिपिक

''दो नैना एक कहानी, थोड़ा सा बादल थोड़ा सा पानी और एक कहानी....''

—गुलज़ार

हर तरफ बिखरे पड़े हैं चेहरे। कुछ इंसानी, कुछ रूहानी दूर तलक देखिये बिखरी पड़ीं है कहानी। कुछ को तो जाने, कुछ अभी तक ना पहचानी। शून्य है कुछ आँखें, तो कुछ है बड़ी रुबानी। कुछ में है दर्द, तो कुछ को है बातें छुपानी। मज़ा तो तब है, जब उनकी कहानी जाने उन्हीं की जुबानी। वर्ना कहेंगे ''साहब, हरगिज़ नहीं है सच, सब है कही सुनी अफवाहें पुरानी।''

तो साहब गौर फरमाए, बात है उस ज़माने की। अब आप सोच रहे होंगे कि किस ज़माने की? अरे सब्र रखिये ज़नाब, बताते हैं। पर्दा हौले—हौले ही उठाते हैं। लुत्फ़ गरम चीज़ों का हलकी हलकी चुस्कियों से ही जमाते हैं। उसी ज़माने की जो हम सब की ज़िन्दगी में एक बार तो आया, फिर कभी किसी ने वापस ना पाया। वादियों में जब बर्फ पिघल चुकी थी, मगर गर्मी कहर ढहाने का मन न बना पाई थी।

हिमालय की तलहटियों में अभी भी रातें ठंडी थी। कालेजों में परीक्षायें होने वाली थी। ना—ना गलत, बिल्कुल नहीं। ग़लत ना समझ लीजियेगा, ये कॉलेज की कहानी नहीं है मगर विद्यार्थियों के जैसे अल्हड़ रवैये दिखाते परिपक्व व्यक्तियों की आपबीती है।

> ***''उर्दू मिश्रित हिंदी में लिखा गया यह खूबसूरत और संजीदा वाकया वाकई काबिले गौर है। हिन्दुस्तानी में हमेशा से मौजूद ज़ुबानी रवानगी इस किस्से को और दिलचस्प बनाती है''***

तो मुद्दे पे वापस आते हैं। बात चल रही थी चेहरों की, तो जनाब ऐसा ही एक चेहरा है इनका और एक चेहरा है उनका। इन के दिल में तो जाने कबसे राग सारंग बज रहा है उनके लिए, वो भी कैहरवा ताल में। बस ढोला जी की छाया होले तो घूमर नृत्य करते—करते डोले, वो भी बाईसा बनके। और उनका दिल क्या चाहे? यह तो भाई हमें भी नहीं मालूम है। अजी हम तो वो ही सुनते हैं जो इनका दिल फरमाता है हमसे। अब इनको ही नहीं मालूम कि उनके दिल में क्या है, तो हमें कैसे मालूम होगा।

आप भी सोच रहे होंगे की क्या ये ''इनका, उनका'' लगा रखा है। सीधे—सीधे नाम क्यूँ नहीं बताते भाई? अरे सरकार। कुछ फ़सानो में, नाम ना ही ले तो ही अच्छा होता है। जिनके लिये लिख रहे हैं उनके लिए भी और काफ़ी हद तक लिखने वाले के लिए भी। वैसे भी किसी अंग्रेजी के लेखक ने कहा है, कि नाम में आख़िर क्या रखा है। वो अलग बात है की 'विलियम साहब' ने सोलह आने सच कहकर, नीचे अपना ही नाम सुनहरे अक्षरों में गढ़वा रखा है, 'शेक्सपियर'। नाम का क्या है?!! अजी हमारी माने तो नाम ही तो सारी फ़जीहत की जड़ है। गलती से गलत जगह नुक्ता जग जाए तो भोले—भाले इंसान का धर्म भ्रष्ट हो जाए। दोस्ती की पहली रवायत ये, के दोस्त नाम पर हमेशा पर्दा डाले रखना और हम तो ठहरे लंगोटिया यार इनके। तो मेहरबानी करके हम से कुछ भी पूछिये, बस नाम ना पूछिये। ख़ैर, जो हो चुका है और जो मालूम है, उसकी दास्तांगोई तो कर ही सकते हैं। वैसे इस सब अफ़रातफ़री में सबसे ज़्यादा गुणी, सुलझा हुआ, समझदार एवं ऐतबारी शख्स अगर कोई था, तो वो तो हम ही थे। ये तो आप समझ ही गए होंगे अब तक। नहीं समझे? कोई बात नहीं, जैसे—जैसे मंज़िल करीब आएगी, सब अपने आप समझ में आ जाना है आपको।

आमना—सामना जब हो तो बस दुआ सलाम हो जाए। एक भी हर्फ़ना वो बोले और इनकी क्या मज़ाल है जो एक भी लफ़्ज, लबों की डाली से टूट कर गिर जाए। समझते सब है, बस कहने से कतरा जाएँ। किसी से पूछा उन का हाल इनसे, तो कहते



हैं की काफ़ी परेशान है आजकल। हमने सोचा गोया होना भी चाहिए। भाई, ज़मानेभर को परेशान करके कैसे किसी को सुकून से सोना चाहिए। मगर बस यही वो अदा है उनकी जिस पे, हमारी समझ से, इनका दिल फ़िदा होना चाहिए। अगर गलती से कोई और फ़िदा जो हो जाए, तो लीजिये साहब कहर ढह जाए, इबादत करते–करते काफिर होने की मोहर चस्पा हो जाए। कल मिले थे वो इन्हें बाजार में। वो मिले थे या उनसे नैना मिले थे, खुदा जाने, कहना मुश्किल है। लेकिन जनाब आसानी से कह भी कौन और कब पाया है। ये तो वो दरिया है साहब, जिस में इंसान डूब के ही ज़िंदा निकल पाया है। खैर बताते हैं, बस नैना ही मिले थे और वो मुस्कुरा के आगे बढ़ चले थे। कसम खुद की, यह तो अपनी जगह से ज़रा भी ना हिले थे। आखें बंद कर उनके पल्लू को अपने चेहरे पे फिसलता महसूस कर रहे थे। उनकी खुशबुओं के बिख़रे कणों को समां से बटोरते चले थे।

कई बार सोचते हैं की दिल कड़ा कर एक बार बोल ही दे। देखा जायेगा, जो होना होगा फिर हो जायेगा। कम से कम वो भरम तो टूट जायेगा। आर या पार, आख़िर खड़े कहाँ है, ये तो पता चल जायेगा। फिर सोचते हैं रहने ही दें, फिर वो मज़ा कहा रह पायेगा। बेकद्री ही सही बाद में, पर सुकून तो ये गुमान थोड़े देर को दे ही जायेगा। इनके अंतर्मन की उस उथल पुथल को हम भाँप रहे थे, ना सुनने के डर से ये कुछ भी कहने से बच रहे थे। वैसे भी समझदार ना समझ को, ना समझ समझदार आखिर समझाए भी तो कैसे। बन्दर माफ़िक हैं, अपना तो बनाया नहीं जाता हमारा घर भी तोड़ के आगे बढ़ जायेगे।

कुछ दिन और बीते। देखने दिखाने के सिलसिले ज्यों के त्यों बरकरार रहे। कभी–कभी रस्ते में टकरा जाएँ तो कुछ इक तरफ़ा हिम्मती बोल लबों से टपक जाएँ। फिर अगली मुलाक़ात का बहाना सोचने में ज्यादातर वक़्त गुज़र जाए। हर पहल इनकी, सर पत्थरों से टकरा के वापस लौट जाए। और हम ये सोचते सोचते मरे जाएँ, कि काश वो अपनी तरफ से कुछ समझ के ही आ जाएँ, वर्ना इन्हे संभालना दिन–ब–दिन मुश्किल होता जाए।

बेचैनी के आलम थे और मौसम सुहानी बौछारों वाला था। हर रिमझिम को तो बस आके, ठंडी ठंडी हवाओं से दिल सुलगाना था। भीगे मौसम में भी, इनके सूखे नैनों को पतझड़ का मौसम दिखलाना था। बस यही सोच के कदम इन्हें आगे बढ़ाना था। बड़े भोलेनाथ के भक्त बने फिरते थे, तो थोड़ा भोलापन आना लाज़िमी ही था। उस दिन ठान के निकले थे घर से, जोश इतना मानो सर पे कफ़न बाँध के ही बड़े थे। आज तो कह के ही रहेंगे। रंगीन जज़्बातों के सुई धागे से उनके मनपटल पे उम्दा चिकनकारी करके ही मानेगे। हमने भी इस बार रोका नहीं, रोकना भी संभव कहां था। भाई विनाशकाले विपरीत बुद्धि, हमारी या इनकी ये कहना कठिन था। खैर सजधज के, टशन में निकले घर से। चेहरे की भाव भंगिमा बता रही थी, मानो पीछे गाना बज रहा हो ''घर से निकलते ही, कुछ दूर चलते ही, .....'' आगे जो हुआ वो कतई सुरीला न हुआ। बड़ी कर्कश आवाज़ के स्वामी ने अपने वाहन की सीमाओं का परीक्षण करना चाहा, परन्तु उनके इस परीक्षण का अनुमान इन्हें ज्ञात न हो पाया। अपनी चहल कदमी में भूल गए की सड़क पे चलने का सलीक़ा क्या होता है और फिर वही गलती की, जो नहीं करनी चाहिए थी। बीच सड़क पे बिन देखे कूद पड़े, लाख बचाते गाड़ी वाले भाई साहब मगर ऊपर वाले की मज़ी के आके न टिक सके। गाड़ी में गाना देखिये कितना सटीक बज रहा था, ''नीचे पान की दुकान और ऊपर.....'' जगह भी कुछ वैसी ही थी, मानो आँखों देखा हाल बयाँ कर रहा हो। मगर ये कोई गोविंदा की फ़िल्म नहीं थी, की कूद फांद करके बच जाए। टक्कर होनी ही थी, सो जा टकराये।

पैर तुड़वाये, माथे पे टाँके लगवाये, अब लेटे हैं अस्पताल के जनरल वार्ड में पलकें बिछाये। अगल बगल चार दोस्त हैं, जिसमे से तीन ना मुराद तो पिछले डेढ़ घंटे से चाय पीने गए हैं। बाकी बचा एक, यानी हम, सो वो तो बैठे ही हैं, दुर्योधन बन

सिरहाने। उम्मीद है की उठेंगे यह, फिर से जल्द ही। आखिर उम्मीद पर ही तो दुनिया कायम है। वैसे ये उम्मीद तो हमारी है, इनकी तो आप जानते ही होंगे। उनको खबर तो पहुँचवा दी है, मगर आई तो नहीं है मोहतरमा अभी तक देखने।

इनके हाल पर एक शेर याद आया है, मुलाहिज़ा फरमाए ''इब्तिदा इश्क़ है रोता है क्या, आगे–आगे देखिये होता है क्या।'' वैसे आपको इत्तला कर दे कि ये मीर साहब थे, अरे वही अपने मीर तकि मीर। यकायक याद आ गए तो कागज़ पे छा गए। कौन जाने उन्होंने भी दिल लगाया हो और मजनू बन पत्थरों से सर फुड़वाया हो। बाद में घर वालों ने अकल ठिकाने लगाई, तो बैठ गए लेकर कलम दवात और स्याही। हाल–ए–दिल कागज़ों पे उकेरते गए और वाह–वाही लूटते गए। उम्रे दराज़ होने के बाद उसी को नसीहत कहके चलते बने। गौर तलब बात तो यह है की, सालों पहले आगाह कर गए थे। मगर बड़े बुज़र्गों की सलाह नज़र अंजाद करना तो इंसानी फितरत है।

वैसे सच कहे तो हम लेखक भी अजीब होते हैं, अपनों के भेस में रक़ीब होते हैं। ऊपर गुलज़ार साहब शायद हमारे दो नैनों की ही बात कर रहे थे। अगल बगल टुकुर–टुकुर ताकते नैनो को भीड़ में कोई कहानी दिखाई दे जाए तो बढ़िया और कुछ नहीं मिला लिखने को, तो हो जाओ पानी–पानी। अब ये पानी दुख में निकले है या शर्मिंदा होने के कारण, ये तो लेखक के मिज़ाज़ पे मुनहसिर है। अपनी ज़िन्दगी में तो कुछ खास होता नहीं है और दूसरों की, दूसरों की ज़िन्दगी में दख़ल अंदाज़ी करते थकते नहीं हैं। बैठे रहते हैं उल्लूओं की तरह शाम तलक इंतज़ार में। चाय की चुस्कियों और गुलिस्तां में अधखिली कलियों को नोचते जैसे तैसे दिन गुजर जाता है पर दिमाग में कुछ नहीं आता है और रात में, और रात में ही कलम चलाते हैं....

क्षणिका

# नया साल



**विरेन्द्र रमोला**
वरिष्ठ लेखाकार

साल गुजर गया अब,
नए की तैयारी है।
दुनिया के इस रंगमंच पर,
कार्यक्रम जारी है।।

कलाकार कुछ चले गए,
कुछ व्यस्त हैं,
और बाकी की भी बारी है।
कुछ ऐसा रोल कर गए,
जो सब पर भारी है।।

संचालक हैं पर्दे में,
आना और जाना जारी है।
लोग कहां सब चले गए,
ये जानने की बेकरारी है।।

कविता

# शब्द बड़े अनमोल



**विक्रांत कुमार**
सहायक लेखाधिकारी

बोल सके जो बोल रे बन्दे, पर शब्द बड़े अनमोल....
इन शब्दों के गूढ़ भंवर में, तोल–तोल के बोल,
क्या शब्दों के इन वाणी से ही, महाभारत नहीं रची गयी थी?
क्या शब्दों के ही बल पर, गीता कुरान नहीं कही गयी थी?
शब्दों से ही बनते रिश्ते, शब्दों से ही ये अलगाव,
शब्दों के ही बल पर मिलती, दुःख में सुख़ की छांव।।
शब्द करादे राई को पर्वत, और करदे.... पर्वत को राई,
और दो मीठे बोलो से ही, राधा को मिले कृष्ण–कन्हाई,
शब्दों के कड़वेपन से ही, देश ने गुलामी को झेला है,
बोल तू मीठे बोल रे बन्दे, दो दिन का ये मेला है।।

क्षणिका

# 'सर्दी और कवि'



**विरेन्द्र रमोला**
वरिष्ठ लेखाकार

सर्दी : कंपा दूंगी जमा दूंगी,
दांत सारे बजा दूंगी।
कवि : ऐ सर्दी! इतना न अकड़,
अगर हिम्मत है तो मई–जून में पड़।
गरीबों की झोपड़ी में बच्चों को न सता,
अमीरों के महलों में भी तो कभी तू जा।।
सर्दी : मेरा आना ही मेरा करम है,
और सर्दी देना ही मेरा धरम है।
मेरे जाने पर ही तो बसंती बहारें आयेंगी,
और फिजाएं फिर से गर्माएंगी।
कवि : ऐ सर्दी! तू धन्य है–तू धन्य है।



# चम्बा के चीड़ – धनौल्टी के देवदार



**शिवम सिंह**
खण्डीय लेखाकार

उत्तराखंड के चंबा की हमारी यात्रा शुरू होती है ऋषिकेश से। शाम को 4 बजे बस ने चंबा के लिए प्रस्थान किया। जिस गति से बस पहाड़ों के घुमावदार रास्तों पर बढ़ रही थी, उसी गति से सूरज ढल रहा था। कभी सामने वाले पहाड़ पर सूरज की शाम की हल्की रोशनी दिखती तो कभी हम खुद रोशनी में भीग रहे होते। ऐसा लगता मानो हम शाम का पीछा कर करे हों। ऊपर जाते ही सूरज फिर से दिखता और एक और ढलती शाम का नज़ारा प्रस्तुत हो जाता। खैर मैंने लगभग चार–पांच शामों का आनंद तीन घंटे में उठाया और शाम सात बजे के आस पास चम्बा पहुंचे। बस यात्रियों को चम्बा मार्केट में छोड़ती हैं, जहाँ से विश्राम–गृह चम्बा करीब 3 किमी0 है। वातावरण धीरे–धीरे ठण्डा हो रहा था। हल्की–हल्की हवा भी चलने लगी थी जो कपड़ों के विभिन्न कोने से अन्दर जाती और सिहरन दे जाती। इस ठण्ड में वॉक करना एक और आनंद का अनुभव है। ऊँचे व ढलान भरे रास्ते मुझे ज्यादा पसंद है। शायद पूर्णिमा के आस पास का समय था। बस केवल कुछ बच्चे शायद कोचिंग/ट्यूशन से वापस आ रहे थे। इनमें जोश देखकर अक्सर अपने स्कूली दिनों का ख्याल आ जाता है। उन्हें दिनों की बातें करते हम लगभग तीस मिनट में होटल पंहुचे।

> *"पहाड़ो की रानी मसूरी के पास ही स्थित हैं दो और पर्वतीय पर्यटन स्थल धनौल्टी और चम्बा। उत्तराखण्ड के अनुपम नैसर्गिक सौन्दर्य को दर्शाता यह यात्रा वृतान्त मन को इन सुरम्य स्थलों की ओर बरबस ही आकर्षित करता है"*

रास्ता होटल पर जाकर ही खत्म होता था। हम अन्दर गए तो रिसेप्शन पर कोई नहीं था। हल्की–हल्की हवा से बाहर लगे चीड़ के पेड़ झूम रहे थे। हमने आवाज दी "कोई है...."। दो–चार बार आवाज देने पर भी कोई उत्तर नहीं मिला। हमारे चेहरे



चीड़ के वृक्ष, चम्बा, उत्तराखण्ड।

पर हवाइयां उड़ रही थीं और हम कुछ सोचने की स्थिति में नहीं थे। हमने तय किया कि अन्दर जाकर देखते हैं। नीचे दो ही कमरे थे और दोनों बंद थे। वहां आस–पास अन्दर–बाहर कोई भी नहीं दिखाई दे रहा था। हम लोग काफी थक चुके थे और ऊपर से ये आफत थी। इतने में पीछे से आवाज आई ''बताइए सर! मैं क्या कर सकता हूँ? 30–35 साल का एक आदमी कैप लगाये जैकेट पहने पीछे खड़ा था। मेरे दिमाग में 'पुरानी हवेली का चौकीदार' जैसे कुछ भूतिया चित्र उभर आये और सब सँभालते हुए मैंने अपनी बुकिंग की बात कही तो उसने मुझे नीचे का एक रूम खोलकर दे दिया। पूछने पर पता चला कि वहां किसी और का कमरा बुक नहीं है। डर और थकावट में थकावट जीत गई और एक गहरी नींद आ गई।

अगली सुबह मुझे जीवन में हमेशा याद रहेगी। जब मैं सोकर उठा तो सुबह के सात बजे रहे होंगे। शायद थकने के कारण बीती रात बहुत गहरी नींद आई थी और ऐसी नींद के बाद उठने पर मन एक अनोखे अजीब से आलस्य युक्त भाव से ग्रसित रहता है। मैं भूल भी गया था कि मैं चम्बा में हूँ। दोस्तों ने उठाते हुए कहा ''बाहर सूरज निकल आया है।'' मैंने आखें खोली तो कुछ ही पलों में चेतना वापस लौट आई और मैं नंगे पाँव ही बाहर आ गया। होटल के सामने से चीड़ के पेड़ों के पीछे से झिलमिलाता हुआ सूरज निकल रहा था। हवा में ठण्ड थी, दूर–दूर तक शांति बिखरी हुई थी, पक्षी आसमान में घूम रहे थे और इन सबके बीच मैं अपनी आखें पूरी खोलने का प्रयास कर रहा था, जो अभी भी गहरी नींद में अलसाई हुई थी। बड़े दिनों बाद दिन की शुरूआत एक जगह शांत बैठकर कानों में पक्षियों के कलरव सुनते हुए हुई। आज यह लिखते हुए एक बार फिर से मुझे वो सुबह की याद ताजा हो आई और मेरे चेहरे पर अकारण ही मुस्कान तैर गई।

विश्रामगृह–चम्बा टॉप पॉइंट पर स्थित है। सामने की ओर ढेर सारे फूल लगे हुए हैं जो एक अलग ही छटा बिखेरते हैं। हमने चम्बा को टूरिंग स्पॉट के लिए इसलिए चुना था ताकि वहां जाकर हम लोग विभिन्न जगहों के लिए दौड़े नहीं, बल्कि वही रहकर कुछ दिन आनंद ले। या यूँ कहे तो हम वहां घूमते कम, रहने ज्यादा गये थे। अगर टूरिस्ट स्पॉट की बात करें तो चम्बा



ईको पार्क, धनौल्टी, उत्तराखण्ड।

में कुछ भी नहीं है, है तो बस पहाड़ी व्यू। GMVN के बंगले से ही पूरी वैली का दृश्य आसानी से उपलब्ध होता है। रविवार होने के कारण कुछ बच्चे होटल के प्रांगण में खेल रहे थे। खेल में हम भी शामिल हो लिए। बच्चों के साथ खेल में बच्चे बन गये। हमने बच्चों के साथ अन्ताक्षरी, अनुवाद, चिडिया उड़ जैसे कई खेल खेले। बच्चों के साथ मिल कर नए–पुराने कई गीत गाये। वो नए गाने गाते तो मैं किशोर दा या रफी साहब के नगमें गुनगुनाता। (कभी कभी मैंने न उनके गाने सुने होते और न ही वो हमारे) पूरा एक दिन कैसे बीत गया पता भी न चला। शाम में मार्किट की सैर की और लोकल खाने का लुत्फ लिया।

सुबह हमें धनौल्टी के लिए निकलना था। आशा के अनुरूप निकलने में देरी होनी ही थी सो हमने ब्रेकफास्ट होटल में ही करने की इच्छा जाहिर की। मेरा भी मन था की यहाँ की एक और डिश का आनंद लिया जाये। इस बार मेन्यु पर पुनः नजर डाली गई और अन्ततः उंगली वेज–बिरयानी पर आकर रुकी। हम लोग गरम पानी में नहा–धो के तैयार हो गये और होटल के बाहर कुर्सियाँ लगाकर बैठ गये। मैंने रोज की तरह अपना पॉकेट रेडियो ऑन किया और विविधभारती 'देश की सुरीली धड़कन' ट्यून किया। 'गाने नये जमाने के' कार्यक्रम में भी एक पुराना गाना आ रहा था। रेडियो पर गाने सुनना मुझे बहुत पसंद है। एक लोकल चैनल पर कोई लोकगीत ट्यून किया जिसकी भाषा हमें पूरी समझ में नहीं आ रही थी, पर संगीत काबिले तारीफ था। ऐसे में एक बार फिर से सूरज झिलमिलाता हुआ चीड़ के पेड़ों के बीच से निकल रहा था। दूर–दूर तक शान्ति थी और हवा की सरसराहट कानों में गूँज रही थी। ऐसे में हमने वेज बिरयानी का आनंद उठाया जो बेहतरीन बनी थी।

हम लोग सामान लेकर चम्बा मार्केट की ओर आये। वहां से अमरूद खरीदे और मसूरी वाली बस में जाकर बैठ गये। थोड़ी ही देर में बस चल दी। बस चालक बहुत ही तेज चला रहा था। कई मोड़ पर तो मुझे लगा कि बस अब फिसली। पर आसपास के लोगों ने बताया कि ड्राइवर *एक्सपर्ट* है और बीस साल से इसी रुट पर चला रहा है, सो उसे रोड का एक एक इंच का अंदाजा है। मुझे वर्णन में अतिशयोक्ति नज़र आई पर कर भी क्या सकते थे। जल्द ही भयानक यात्रा का अंत हुआ और बस विश्राम–गृह धनौल्टी के गेट के सामने रुकी। मुझे टी एच आर धनौल्टी काफी बड़ा और नया बना हुआ मालूम हुआ। हमने वहां इकॉनमी बुकिंग की थी पर उसने हमें डीलक्स रुम दे दिया। हम अपने रुम में सामान पटक कर वापस बाहर आ गये और होटल के रेस्टोरेंट में बैठकर चाय की चुस्कियों का आनंद लिया।

धनौल्टी देवदार के पेड़ों के बीच बसा हुआ है। इस छोटे से हिल स्टेशन के हर ओर के विहंगम दृश्य आपके मन को निश्चित ही मोह लेते है। 'धनौल्टी इको–पार्क' विश्राम–गृह धनौल्टी के बिल्कुल बगल में ही है। पूरा पार्क देवदार के पेड़ों से आच्छादित है। हम आगे बढ़ने लगे और साथ ही साथ आने वाले हर एक मनमोहक दृश्य का आनंद उठाते रहे। बीच बीच में मानव निर्मित झूलों की भी व्यवस्था थी (क्योंकि बिना इनके किसी को पार्क की फील ही नहीं आती है) जिसकी न मुझे कोई इच्छा थी और न ही समय। मैं तो प्रकृति के साक्षात् स्वरुप के दर्शन में व्यस्त था। मन करता था हर तरफ के दृश्य को किसी तरह आखों में हमेशा के लिए उतार लिया जाये। हर कदम एक नया दृश्य देता था और एक नया उत्साह भी कि आगे क्या होगा। मन को संभालते हुए मैं धीमे–धीमे चल रहा था। हमारे पास पूरा दिन था ईको पार्क के लिए। फोटो सेशन का एक दौर चला, जिसमे मैंने एक एक्सपर्ट फोटोग्राफर की तरह अभिनय करते हुए विभिन्न पोज में साथियों की पिक्चर ली। जिसको वो हमेशा की तरह लेने के तुरंत बाद ही देखने को आतुर हो जाते और हमेशा की तरह मैं भी उसे बाद में दिखाने की बात करते हुए अगले पिक्चर की भूमिका बनाने लगता था। यह कई बार हो चुका है पर अक्सर होता है और शायद होता भी रहेगा। खैर मुझे इसका होना अच्छा लगता है।

कुछ ही समय में एक सपाट सा मैदान जैसा दिखा। जहाँ पर कुछ लोग बैठे हुए थे। धूप ऐसी थी कि वह थोड़ी गर्मी कर रही थी पर साथ ही चलती हवा ठण्ड का एहसास भी दिए हुए थी। ठण्ड मिश्रित गर्मी सैर–सपाटे के लिए बेस्ट होती है और घुमक्कड़ व्यक्ति हमेशा इसका इंतजार करते रहते है। मैदान के आगे घाटी थी, जिसके मुहाने पर कुछ पर्यटक धनौल्टी के बेहतरीन मौसम और प्रकृति की छटा निहार रहे थे। हमने भी एक स्थान चिन्हित किया और वहीं पर बैठ गये। पूरे स्थान पर अच्छी घास बिछी हुई है, दूर से देखने पर लगता है कि मानो हरी कालीन सजाई गई हो। जब हर जगह अच्छी घास हो तो बैठने का सोचते है एहसास होता है कि आगे ज्यादा अच्छी घास है। एक–दो बार ऐसा करने पर समूह में से ही कोई या फिर आपका मन ही ये कहता है कि चलो छोड़ो बैठते हैं एक जगह। इसी प्रक्रिया के तहत हमने भी एक स्थान ढूँढा। मैने बैकग्राउंड में रेडियो को धीमी आवाज में ट्यून कर दिया। रेडियो के गाने में सबसे अच्छी बात ये होती है कि अगला आने वाला गाना कोई भी हो सकता है और यही मेरी रुचि को बनाये रखता है।

हम लोगों के पास पूरा दिन था। सुरकंडा देवी और कानातल का प्लान अगले दिन पर टाल दिया गया था। वहीं घास पर दो–तीन घंटे रहे। मूंगफलियों का दौर चला। चम्बा से लिए अमरुदों का रसास्वादन किया गया। घास पर लेटे नीले आकाश को देखना और विशेषकर तब जब वह आकाश पर्वतीय घाटियों में आकर खत्म होता हो। ऐसा महसूस होता है–जैसे पहाड़ों से घिरे घाटी के मध्य मैं लेटा हूँ और नीला आकाश पहाड़ों पर टिका छत बना हुआ है। मैंने अपनी कॉपी–पेन निकाल कर कविता रचना भी की, जिसका भाव स्वतः जाग उठता है। इसी बीच पत्नी जी ने एक आनंददायक नींद भी ले ली। हम बैठकर पर्यटन का आनंद उठा रहे थे, तो वही पर कुछ लोग अपने खेतों में काम भी कर रहे थे। इसी भाव पर केन्द्रित कविता का सृजन हो रहा था जिसकी एक पंक्ति है ''घड़ी एक सी रहती सबकी, पर वक़्त अलग है सबका''। शाम हो आई तो हम लोग वहां से वापस अपने होटल आ गए।

अगले दिन सुबह हम कद्दूखाल के लिए निकले। कद्दूखाल वह स्थान है, जहाँ से सुरकुंडा देवी की ट्रैकिंग की जाती है। यात्रा का सबसे मजेदार यही दौर था। लगभग 3 कि0मी0 की चढ़ाई शुरू की हमने। चढ़ाई के साथ दृश्य बदलने लगा। जहाँ



नीचे अच्छी खासी धूप थी, ऊपर जाते जाते धूप जाती रही और बादल आस–पास से तैरने लगे। मौसम धीरे–धीरे ठंडा हो चला और नीचे घाटी का व्यू और अच्छा मिलने लगा। मैं रास्ते पर कम और पास के दृश्यों पर ज्यादा ध्यान दिए हुए थे। मैंने अपने मधुर कंठ से ''चलो बुलावा आया है'' और ''शिरडी वाले साई वाले बाबा'' जैसे गीतों का गायन भी किया।

चढ़ाई के लिए खच्चर सुविधा भी थी लेकिन उसका प्रयोग काफी कम लोग ही कर रहे थे। वैसे कुल दस से ज्यादा चढ़ने वाले नहीं होंगे। मैं बीच में फोटो के बहाने रुक जा रहा था और उसी में अपनी थकावट को आराम दे रहा था। ऊपर पहुँचकर हमने मंदिर दर्शन किया और वहीं पैर लटकाकर बैठ गये और मूंगफलियों का अंतिम दौर चला। हमने एक किलो मूंगफली इस पूरे ट्रिप पर निपटा दी। थोड़ी देर रूकने के बाद हम वापस लौटने लगे। लौटते वक्त का नज़ारा और अच्छा था। लाल रंग के फूलों को देखकर हम अंदाजा लगाते कि अभी कितना उतरना है। उतरने में ज्यादा समय नहीं लगता क्योंकि इस कार्य में ग्रेविटी ''जी'' सहायता करती है। कद्दूखाल पहुँचकर हम वापस धनौल्टी में अपने होटल आ गए। अगले दिन हमारी देहरादून से ट्रेन थी। हम सुबह देर से उठे और नाश्ता वहीं करके दोपहर तक मसूरी होते हुए देहरादून पहुंच गए। यात्रा समाप्त तो हो गई पर मस्तिष्क पटल पर जीवंत यादें छोड़ गई।

कविता

# अल्फाज़.....



**शिवम लिल्हौरी**
लिपिक

घिसे जो कोई आज नोंक कलम की,
सब तकदीर का ही तो लेखन है।
होते जाते बार बार कागज स्याह जज़्बातों से,
जिन्दगी के कितने ही उन्मादों को इकठ्ठा समेटन है।
ख्यालों में जितना उलझे, बड़े उतनी ही इसकी तपन है,
समझे कहां इसलिए तो कहलाता बाँवराँ ये मन है।
तरसती अँखियन प्रिये दरस बिन जलन है,
विरह की है फाँस, बढ़ती जाये जिसकी चुभन है।
किसी के अंदर की वो जो घुटन है,
समझो बस जैसे जल बिन मछली तड़पन है।
ना जाने वो सुलगन है या अंदर ही अंदर घुलन है,
कौन जाने जीवन है या कोई जीते जी ही मरण है।
ऊपर बैठे जो कोई, सब कुछ मौन होके देखन है,
रज़ा में उसकी सदा किसी की किस्मत का ही खनन है।



कविता

# वो एक पल



कु0 सोनिया तोमर
डी.ई.ओ.

वो एक पल जो जाने कितनी बार यूँ ही गुजर जाता है,
वो एक पल जो कभी मुश्किल इतना कि गुजरता ही नहीं।
वो एक पल जब अनायास हँसी छूट जाती है,
वो एक पल जब दुआ कबूल होती है।
वो एक पल जब उदास बूँद आँख से गिरती है,
वो एक पल जब कुछ नया जन्म लेता है।
ये सारे पल बीत जाते है बिना किसी आहट के और
हम उन्हें पहचानते भी नहीं।
ऐसे ही एक पल से टकरा गयी मैं कल,
वे एक पल जब स्नेह होता है।
कल महसूस किया मैंने पूर्णता में पहली बार एक नन्हा सा लम्हा,
जब महसूस हुआ समर्पण का भाव, एक जुड़ाव, एक खिचांव।
एक ऊर्जा होने का एहसास जब मैं, मैं न रही तुम हो गई,
कल पता चला कोई इंसान में खुदा को कैसे पा लेता हैं जब स्नेह होता है।।



गज़ल

# फितरत



**शिवम लिल्हौरी**
लिपिक

ना आना था, ना आयेगा कोई
क्यूँ फिर रास्तों पे नजरें जमाये है कोई।
मुद्दत हुई किसी की सूरत देखे हुए
सीरत पर आज भी बरकरार है कोई।।
आखिर थे हम उनके अपने, गैर थोड़े ही कोई
ना अपना माना, तो फिर अपनाता क्यूँ कोई।
प्यार से फेरता हाथ जो, रो लेते गर रुलाता कोई
पर वो ना आये, तो फिर पलके भिगोये क्यूँ कोई।।
दोहरातें रिवायतें हम भी, गर समझाता कोई
फिर नासमझ खयालात सजाता है क्यूँ कोई।
शिद्दत से लिखे ख्यालों को पढ़ कर अधूरा बताये कोई,
ना पूरे होने थे, ना फिर मुकम्मल कर पाया है कोई।।
गुनगुनाये झूठ महफिल में, पहली सफ में सच जानता है कोई
झूठ का है रुआब ऐसा, की सच पर ऐतबार करे ना कोई।।



गज़ल

# चार लाईनें.....



**सुशील कुमार देवली**
सहायक लेखाधिकारी

कहीं पर अच्छी बातें मिलें, तो नकल किया कर,

दुनियांदारी के हिसाब से तू भी, लिबास बदल लिया कर ।

दर्द सिलने वाले दर्जी मिलते कहाँ हैं इन दिनों,

अपने ही सुई धागे से अपने दर्द सिल लिया कर ।

जीने के लिए जरूरी नहीं खुराक खुशी की हर वक्त,

कतरा कतरा कभी कभी अपने गम को पिया कर ।

नहाता है हर रोज गंगा में 'वो' तो नहाने दे उसे

तू अपना निवाला बाँट कर किसी भूखे को दिया कर ।

जिंदगी आसां है बिन गुरूर के, इसे आसान ही रहने दे,

तू जिससे नाराज है, खामखाँ उससे बातें किया कर ।





नैनीताल झील का अनुपम दृश्य

छायाकार: सनी राणा
वरिष्ठ लेखाकार

# वर्ष 2017-18 के दौरान उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रमाणपत्र तथा नकद पुरूस्कार पाने वाले अधिकारी एवं कर्मचारी

| क्र.सं0 | नाम<br>सर्व / श्री / श्रीमती / कु. | पद |
|---|---|---|
| 1. | रामबीर सिंह | वरिष्ठ लेखाधिकारी |
| 2. | प्रताप सिंह खड़ाई | वरिष्ठ लेखाधिकारी |
| 3. | राजेश्वर प्रसाद | लेखाधिकारी |
| 4. | भास्करानंद त्रिपाठी | सहायक लेखाधिकारी |
| 5. | टेम सिंह | सहायक लेखाधिकारी |
| 6. | कृष्ण चन्द्र जोशी | सहायक लेखाधिकारी |
| 7. | सुशील कुमार देवली | सहायक लेखाधिकारी |
| 8. | किशोर सिंह कुटियाल | सहायक लेखाधिकारी |
| 9. | महावीर सिंह | सहायक लेखाधिकारी |
| 10. | गणेश प्रसाद | सहायक लेखाधिकारी |
| 11. | चयन भट्ट | सहायक लेखाधिकारी |
| 12. | एन.के. सुब्रमण्यम | सहायक लेखाधिकारी |
| 13. | दिव्यांशु श्रीवास्तव | सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ) |
| 14. | आशीष कुमार रॉय | सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ) |
| 15. | जीवन सिंह सामंत | कल्याण सहायक |
| 16. | एस.जे. रॉय चौधरी | वरिष्ठ लेखाकार |
| 17. | जवाहर सिंह | वरिष्ठ लेखाकार |
| 18. | कुलदीप रॉय | वरिष्ठ लेखाकार |
| 19. | अनिल कुमार सोनकर | वरिष्ठ लेखाकार |
| 20. | सूरत सिंह रावत | वरिष्ठ लेखाकार |
| 21. | संजय कौल | वरिष्ठ लेखाकार |
| 22. | राकेश चन्द्र पाण्डेय | वरिष्ठ लेखाकार |
| 23. | सुष्मिता पाण्डेय | वरिष्ठ लेखाकार |
| 24. | अतुल कुमार रावत | लेखाकार |
| 25. | दिनेश शर्मा | लेखाकार |
| 26. | मोनू कुमार | डीईओ |
| 27. | धनन्जय कुमार | डीईओ |
| 28. | घनश्याम | डीईओ |
| 29. | हयात सिंह सुगड़ा | एमटीएस |
| 30. | नीरज राज | एमटीएस |
| 31. | मालती कुशवाहा | एमटीएस |

# हिंदी सप्ताह
## वर्ष 2017 की झलकियां



हिंदी सप्ताह 2017 के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्ज्वलित करते तत्कालीन महालेखाकार (ले0 एवं हक0) श्री अशोक सिन्हा।




हिंदी सप्ताह 2017 के दौरान उपमहालेखाकार, श्री एन.के. डबराल, माननीय गृह मंत्री का राजभाषा संदेश पढ़ते हुए।




हिंदी सप्ताह 2017 के दौरान कार्यालयकर्मियों द्वारा सुमधुर सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई।

हिंदी सप्ताह 2017 के समापन समारोह में मुख्य अतिथि महालेखाकार (लेखापरीक्षा), महालेखाकार (लेखा एवं हक0) एवं उपमहालेखाकार द्वारा वार्षिक पत्रिका ''हिमज्योति'' के सप्तम् अंक का विमोचन।



हिंदी सप्ताह के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी का लुत्फ लेते कार्यालयकर्मी



हिंदी सप्ताह में आयोजित प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागी महालेखाकार द्वारा पुरस्कार ग्रहण करते हुए।

# मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित खेल प्रतियोगिताएँ



क्रि केट में जीईडब्ल्यूसीसी में महालेखाकार (ले0 एवं ह0) कार्यालय के विजयी प्रतिभागी।



महालेखाकार (ले0 एवं ह0) कार्यालय की महिला टूर्नामेन्ट की प्रतिभागी



महालेखाकार (ले0 एवं ह0) में आयोजित (शतरंज प्रतियोगिता) टूर्नामेंट अन्तिम चरण में भाग लेते कार्यालय के प्रतिभागी



कवि सम्मेलन में लुत्फ उठाते हुए प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं महालेखाकार (ले0 एवं ह0) के अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

# 26 जनवरी
# गणतंत्र दिवस समारोह-2018



गणतंत्र दिवस के अवसर पर महालेखाकार (ले0 एवं ह0) राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के चित्र पर पुष्प माला अर्पित करते हुए।



गणतंत्र दिवस समारोह में प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं महालेखाकार (ले0 एवं ह0) के अधिकारी एवं कर्मचारीगण विभिन्न कार्यक्रमों का लुत्फ उठाते हुए।





वर्ष 2018 में गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रमाणपत्र प्राप्त करने वाले अधिकारी एवं कर्मचारीगण।




सुश्री रोली एस. मालगे को महालेखाकार (ले. एवं हक.) उत्तराखण्ड का कार्यभार स्थानान्तरित करते हुए निवर्तमान महालेखाकार श्री अशोक सिन्हा।




श्री एस.एस. पल्याल, व0 लेखाधिकारी को दिनांक 31.01.2018 को सेवानिवृत्ति के अवसर पर स्मृति–चिह्न भेंट करते तत्कालीन महालेखाकार श्री अशोक सिन्हा।






श्री एस.एस. पल्याल के सेवानिवृत्ति के अवसर पर समारोह में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण।

शुभकामनाएँ

# उत्तराखण्ड के चारधाम पर्यटन स्थल



बद्रीनाथ



केदारनाथ



यमुनोत्री



गंगोत्री




कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून

www.printvisionindia.com